कोटा खुला विश्वविद्यालय
कोटा (राजस्थान)

LS-2B

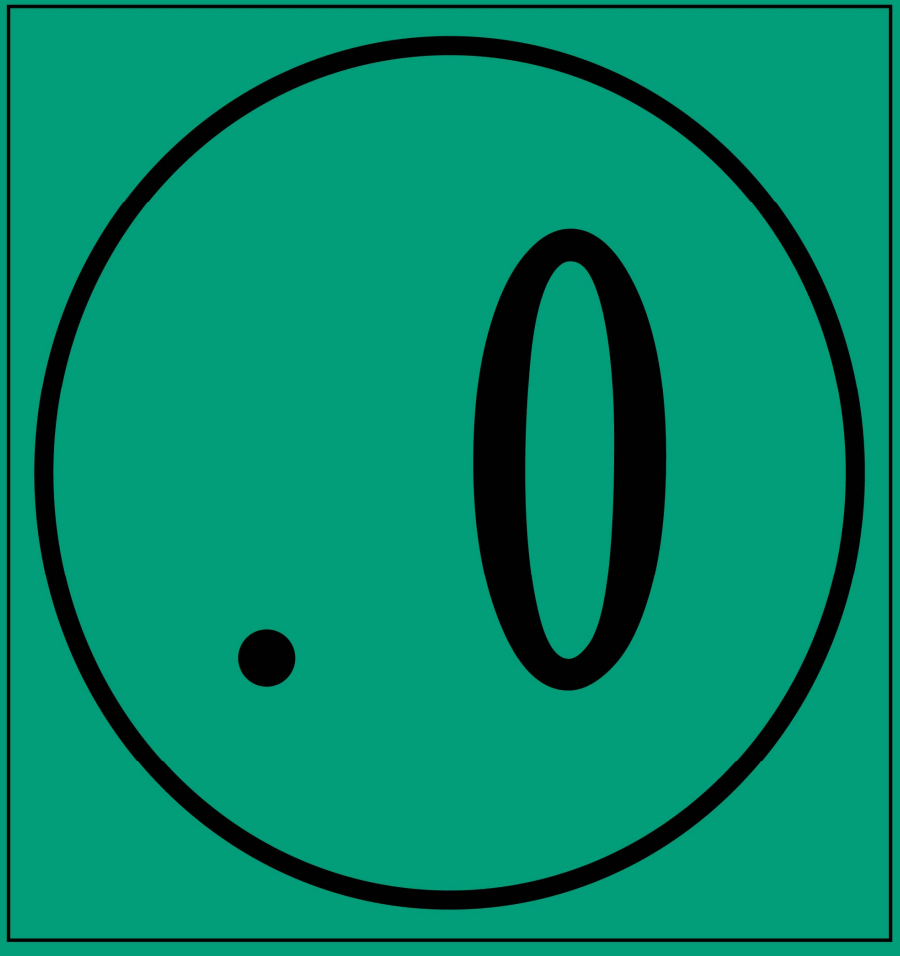

पुस्तकालय वर्गीकरण–प्रायोगिक दशमलव वर्गीकरण

कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा राजस्थान

इकाई 1 दशमलव वर्गीकरण : प्रायोगिक-I ड्यूई दशमलव वर्गीकरण, संस्करण 19 का सामान्य परिचय एवं सापेक्ष अनुक्रमणिका का प्रयोग	5
इकाई 2 दशमलव वर्गीकरण : प्रायोगिक-II सारणी-I: मानक उपविभाजन एवं सारणी-2: भौगोलिक उपविभाजन का प्रयोग	26
इकाई 3 दशमलव वर्गीकरण : प्रायोगिक-III सारणी-3 एवं 3A: विशिष्ट साहित्य संबंधी उपविभाजनों का प्रयोग	49
इकाई 4 दशमलव वर्गीकरण : प्रायोगिक-IV सारणी-4: विशिष्टर भाषा विषयक उपविभाजन एवं सारणी-6: भाषाओं का प्रयोग	62

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

प्रो. बी. एस. शर्मा (अध्यक्ष)
कुलपति
कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा

श्री वी.बी. नन्दा , विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. सी.डी. शर्मा, निदेशक
राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर

प्रो. एस.एस. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

श्री सी.एल. शर्मा, संयोजक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम निर्माण दल

डॉ. एस.पी. सूद
पुस्तकालय विज्ञान एवं प्रलेखन विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सम्पादक

श्री सी.एल. शर्मा, संयोजक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सामग्री निर्माण

डॉ. अनाम जैतली
निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण निदेशालय
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सर्वाधिकार सुरक्षित:
इस सामाग्री के किसी भी अंश की कोटा खुला विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में "मिमियोग्राफी" (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

कोर्स- 2B: पुस्तकालय वर्गीकरन-प्रायोगिक:

दशमलव वर्गीकरण

इकाई-1

दशमलव वर्गीकरण : प्रायोगिक- 1

ड्यूई दशमलव वर्गीकरण, संस्करण 19 का सामान्य परिचय एवं सापेक्ष अनुक्रमणिका का प्रयोग

उद्देश्य: (Objectives)

1. ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति से परिचय कराना,
2. प्रयोगिक वर्गीकरण के नियम एवं वर्गीकरण हेतु विषय निर्धारण प्रक्रिया का ज्ञान कराना,
3. अनुसूचियों एवं अनुक्रमणिका के प्रयोग से परिचय कराना ।

संरचना/ विषय वस्तु (Structure)

1. मेलविल ड्यूई का जीवन परिचय
2. उद्भव एवं विकास
3. संरचना
4. तीनों संक्षेपकों का प्रयोग
5. अनुक्रमणिका का प्रयोग
6. वर्गांक निर्माण विधि
7. प्रायोगिक वर्गीकरण के नियम
8. अनुसूचियों तथा सापेक्ष अनुक्रमणिका से परिचय
9. सारांश
10. वर्गीकृत शीर्षक
11. अभ्यास के लिये शीर्षक
12. ग्रन्थ सूची

1. मेलविल ड्यूई व जीवन परिचय (Biography of Melvil Dewey)

ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति के आविष्कारक मेलविल ड्यूई का पूरा नाम मेलविल लुईस कोसुथ ड्यूई (Melvil Louis Kossuth Dewey) था । इनका जन्म 10 दिसम्बर, 1851 को राज्य के एदम्स सेन्टर नामक नगर में हुआ था । इन्हें बाल्यकाल से ही ग्रंथों के प्रति रूचि थी । तथा 18 वर्ष की आयु में ही इन्होंने 85 ग्रंथों का निजी संग्रह बना लिया था । इन्होंने 1870 में ऐम्हर्स्ट महाविद्यालय (Amherst College) में प्रवेश लिया एवं 1874 में 23 वर्ष की आयु में स्नातक की उपाधि प्राप्त की । विद्यार्थी काल में ही वे महाविद्यालय के ग्रंथालय में अंशकालिक तौर पर कार्य करने लगे और

स्नातक की उपाधि ग्रहण करने के बाद उसी महाविद्यालय मे 9 जुलाई, 1874 में सहायक ग्रन्थालयी नियुक्त हुए ।

ड्यूई ने दशमलव वर्गीकरण पद्धति के आविष्कार के अतिरिक्त 1876 में "लाईब्रेरी जर्नल" नामक पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन का कार्य भी किया तथा अमरीकी ग्रंथालय संघ, वर्तनी सुधार संघ, एवं मीटरी ब्यूरों नामक तीन राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया । उन्होंने " लेक प्लेसिड क्लब " नामक विश्वविख्यात संस्था की स्थापना की एवं 1924 में अपने प्रकाशनों के समस्त स्वत्वाधिकार एक दान पत्र के द्वारा " लेक प्लेसिड क्लब एजुकेशन फाउण्डेशन " संस्था को समर्पित कर दिये । अपने जीवन का अन्तिम समय इन्होंने लेक प्लेसिड क्लब में बिताया । इनका देहावसान 26 दिसम्बर, 1931 में हुआ ।

2. उद्भव एवं विकास (Origin and Growth)

दशमलव वर्गीकरण की योजना का प्रारम्भ ड्यई ने 1873 में किया । इसका प्रथम संस्करण 1876 में " ग्रन्थालयों के ग्रन्थों एवं पुस्तिकाओं को क्रमबद्ध और सूचीबद्ध करने के लिए वर्गीकरण और विषयानुक्रमणिका" (A classification and subject index for cataloguing and arranging the books and pamphlets of a library) के नाम से एमहर्स्ट से प्रकाशित हुआ । इस संस्करण में कल 42 पृष्ठ थे, जिनमें से 12 पृष्ठों की भूमिका, 12 पृष्ठों की अनसूची तथा 18 पृष्ठों की अनुक्रमणिका थी । इस पद्धति के अब तक कुल 19 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं । यह विश्व की प्रथम वैज्ञानिक ग्रन्थालय वर्गीकरण पद्धति है । आज विश्व के सभी देशों के अधिकतर ग्रन्थालयों में इस पद्धति का प्रयोग ग्रन्थों के वर्गीकरण हेतु किया जा रहा है । हिन्दी सहित विश्व की प्रमुख भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है । इसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण इस वर्गीकरण पद्धति की व्यावहारिक उपादेयता, सरलता, दशमलव अंक ,पूर्व निर्मित वर्गांक तथा व्यापक एवं विस्तृत सापेक्ष अनुक्रमणी आदि हैं ।

3. संरचना (Structure)

यूई दशमलव वर्गीकरण का 19वां संस्करण निम्नलिखित तीन खण्डों में है :-

खण्ड 1 : प्रस्तावना एवं सारणियाँ (Introduction and Tables)

खण्ड 2 : अनुसूचियाँ (Schedules)

खपा 3 : सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index)

खण्ड 1 : प्रस्तावना एवं सारणियाँ (Introduction and Tables)

इस खण्ड के प्रारम्भ में सम्पादकीय प्रस्तावना पृष्ठ xxi-xxv पर दी गई है, जिसमें दशमलव वर्गीकरण का उपयोग करने की विधि समझाई गई है । इस खण्ड के पृष्ठ xxvii - xxxii पर पारिभाषिक शब्दावली (Glossary) दी गई है जिसमें सम्पादकीय प्रस्तावना में प्रयुक्त तकनीकी पदों की व्याख्या की गई है ।

इस खण्ड के द्वितीय भाग में निम्नलिखित सात सारणियां दी गई हैं :-

सारणी 1 – मानक उपविभाजन
(Table 1- Standard Sub-divisions)

सारणी 2 – भौगोलिक उपविभाजन
(Table 2-Areas)
सारणी 3 – विशिष्ट साहित्य परक उपविभाजन
(Table 3-Subdivisions of Individual Literatures)
सारणी 4 – विशिष्ट भाषा परक उप विभाजन
(Table 4-Subdivisions of Individual Languages)
सारणी 5 – प्रजातीय, मानव वंशीय, राष्ट्रीय समुदाय
(Table 5-Racial, Ethnic, National Groups)
सारणी 6 – भाषाएँ
(Table 6-Languages)
सारणी 7 – व्यक्ति
(Table-Persons)

इस खण्ड के अन्तिम भाग के रूप में पृष्ठ 471-482 पर तीन संक्षेपक (Summaries) दिये गये हैं, जिनकी सहायता से दशमलव वर्गीकरण में ज्ञान जगत के विभाजन का सामान्य ज्ञान प्राप्त होता है।

खण्ड 2 अनुसूचियाँ (Schedules)

इस खण्ड में ड्यूई ने ज्ञान जगत को पहले 9 भागों में विभाजित किया है और उन कृतियों को, जिन्हें किसी भी वर्ग में स्थान नहीं दिया जा सकता, स्थान देने के लिये एक वर्ग ' 'सामान्य कृतियां ' ' (Generalities) का निर्माण किया । इस प्रकार निम्नलिखित 10 मुख्य वर्गों का निर्माण किया : -

000 सामान्य कृतियाँ	Generalities
100 दर्शनशास्त्र	Philosophy
200 धर्मशास्त्र	Religion
300 समाज विज्ञान	Social Sciences
400 भाषा	Languages
500 शुद्ध विज्ञान	Pure Sciences
600 व्यावहारिक विज्ञान	Technology (Applied Sciences)
700 कलाएँ	The Arts
800 साहित्य	Literature
900 सामान्य भूगोल एवं इतिहास	General Geography & History

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि इन वर्ग संख्याओं के सभी अंक दशमलव भिन्न अंक हैं न कि पूर्णांक। उपर्युक्त प्रत्येक मुख्य वर्ग को पुन : 9 भागों में बांटा गया है, जिसे विभाग कहते हैं । उदाहरणार्थ -300 समाज विज्ञान को निम्नलिखित 9 विभागों में विभाजित किया गया है : -

310 सांख्यिकी	Statistics
320 राजनीतिशास्त्र	Political Science
330 अर्थशास्त्र	Economics

340 कानून	Law
350 लोक प्रशासन	Public Administration
360 सामाजिक समस्यायें व समाज सेवायें	Social Problems & Services
370 शिक्षा	Education
380 वाणिज्य (व्यापार)	Commerce (Trade)
390 रीति रिवाज, शिष्टाचार, लोकवार्ता	Customs, Etiquette, Folk lore

इसी प्रकार विभागों को अनुभागों, उपानुभागों, उप - उपानुभागों एवं और भी सूक्ष्म उपानुभागों में आवश्यकतानुसार विभाजित किया गया है ।

उदाहरणार्थ : -

371.1 अध्यापन एवं शैक्षणिक कर्मचारी	Teaching and teaching personnel
371.12 अध्यापकों की व्यवसायिक योग्यताएं	Professional qualifications of teachers
371.122 प्रशिक्षण	Training

उपर्युक्त समस्त उप - विभाजनों को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

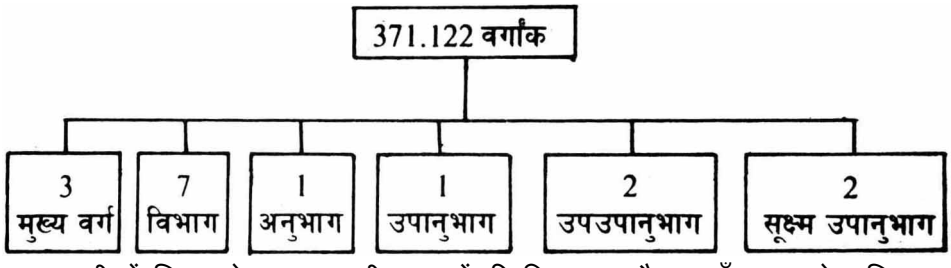

प्रत्येक अनुसूची में विषय से सम्बद्ध सभी प्रकरणों की दिया गया है । यहाँ पर पहले कृत्रिम भाषा में वर्गांक दिया गया है तथा उसके बाद सम्बद्ध विषय या प्रकरण का नाम प्रकृतिक भाषा में दिया गया है ।

उदाहरणार्थ:

307	Communities
328	Legislation
340	Law

सभी वर्गांक सोपान क्रम (Hierarchical order) में व्यवस्थित किये गये हैं । इन अनुसूचियों में वर्गकार की सुविधा व उसके मार्गदर्शन के लिए अधिकांश शीर्षकों के बाद में स्थान - स्थान पर पीरभाषाऐं एवं व्याख्यात्मक टिप्पणी, उदाहरण टिप्पणी, विषय क्षेत्र निर्धारण टिप्पणी, समावेश टिप्पणी, अनुदेश टिप्पणी, यहां वर्गीकृत कीजिए टिप्पणी, सहायक सारणियों से जोडिये टिप्पणी, अनुसूची से जोडिये टिप्पणी अन्यत्र वर्गीकृत कीजिए टिप्पणी, अन्तर्निदेश टिप्पणी आदि के रुप में टिप्पणियाँ दी गई हैं । इनसे वर्गकार को वर्ग शीर्षकों के क्षेत्र उनके विशेष अर्थों में प्रयोग आदि की पूरी जानकारी मिल जाती हैं । अत : वर्गकार को प्रत्येक वर्ग शीर्षक के बाद दी गई टिप्पणियों को ध्यान से पढ़ना चाहिये । यह शीर्षक एवं टिप्पणियाँ निम्न प्रकार हैं : -

शीर्षक (Heading)

प्रत्येक -शीर्षक जो किसी पद या शब्द को प्रकट करता है, इतना व्यापक होता है कि वह अपने अधीनस्थ सभी प्रविष्टियों एवं पहलुओं को शामिल कर लेता है । सोपान क्रमिक सिद्धान्त के कारण विशिष्ट विषय के वर्गांक का शीर्षक अपूर्ण हो सकता है । इसलिए इसे हमेशा ही उस विस्तृत वर्ग का भाग मानकर पढ़ना चाहिये जिसका कि वह उप भाग है ।

उदाहरणार्थ:- 023.8 In- service training प्रविष्टि का अर्थ अपूर्ण है । किन्तु यह 023 Personnel and positions विस्तृत वर्ग का उप भाग है । अत : इसका पूरा अर्थ, जानने के लिये इसके अर्थ के साथ 023 का अर्थ जोडकर पढ़ना चाहिये । अर्थात् 023.8 In- service training, Personnel, Library and information science

अनुसूची में कुछ स्थानों पर किसी अंकन के सम्मुख दो संयुक्त पदों को and द्वारा तथा तीन या अधिक पदों को अल्पविराम चिन्ह (,) द्वारा जोड़ा गया है । यह पद प्राय : समकक्ष (co-ordinate) श्रेणी के किन्तु एक दूसरे के अपवर्जक (mutually exclusive) होते हैं ।

उदाहरणार्थ-

460	Spanish and Portuguese languages
390	Customs, etiquette, folklore

कुछ शीर्षकों के दो पदों के मध्य कुछ रिक्त स्थान हो, तो प्रथम पद द्वितीय पद की अपेक्षा अधिक होता है तथा प्रथम पद में दूसरा पद समाविष्ट होता है उदाहरणार्थ : -

470	Italic languages...
700	The Arts.. Fine and Decorative arts।

यदि किसी शीर्षक के बाद कोई पद गोलाकार कोष्ठक में लिखा गया हो तो वह प्रथम पद का पर्यायवाची होगा ।

उदाहरणार्थ : -

955	Iran (Persia), History
963	Ethiopia (Abyssinia), History

केन्द्रित शीर्षक (Centred Headings)

अनुसूची में एक पहलू को प्रदर्शित करने के लिए एक से अधिक अंकनों के प्रयोग को केन्द्रित शीर्षक द्वारा दर्शाया गया है । इसके अन्तर्गत टिप्पणी द्वारा वर्गकार को किसी पहलू से सम्बन्धित विस्तृत कृतियों के वर्गीकृत करने सम्बन्धी निर्देश दिये गये हैं । उदाहरणार्थ : -

592 - 599ANIMALS AND GROUPS OF ANIMALS

के अर्न्तगत निर्देशित किया गया है कि Taxonomic Zoology से सम्बन्धित कार्यों को यहाँ तथा विस्तृत कार्यों को 591 के अन्तर्गत वर्गीकृत कीजिए ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न सही या गलत बताइये

(क) 797 Acquatic and airsports इस प्रविष्टि में and द्वारा जुड़े हुये दोनों पद -

(i) पर्यायवाची हैं ।

(ii) भिन्न अर्थ वाले समकक्ष दर्जे के पद हैं ।

(ख) 799 Fishing, hunting, shooting इस प्रविष्टि में कॉमा (,) से जुड़े हुये तीनों पद -

(i) पर्यायवाची हैं ।

(ii) भिन्न अर्थ वाले समकक्ष दर्जे के पद हैं ।

(ग) 440 Romance languages..... French इस प्रविष्टि में -

(i) दोनों पद पर्यायवाची हैं

(ii) दोनों पद भिन्न अर्थ बाले समकक्ष दर्जे के पद हैं ।

(iii) प्रथम पद के अर्थ में दूसरे पद का अर्थ शामिल है ।

(घ) 381 Internal Commerce (Domestic Trade

133.1Apparitions (Ghosts) उपर्युक्त दोनों प्रविष्टियों में -

(i) प्रथम पद दूसरे पद की अपेक्षा अधिक विस्तृत है ।

(ii) दोनों पद पर्यायवाची हैं ।

(iii) दोनों पद भिन्न अर्थ वाले समकक्ष पद हैं ।

परिभाषा एवं व्याख्यात्मक टिप्पणी

(Definition and Explanatory Note)

कुछ शीर्षकों को स्पष्ट करने के लिए उनके नीचे व्याख्यात्मक टिप्पणी दी गई है तथा कहीं - कहीं शीर्षकों को परिभाषित भी किया गया है । उदाहरणार्थ :, 330 Economics के नीचे निम्नलिखित परिभाषी दी गई है । The science of human behavior as it relates to utilization of scarce means for satisfaction of needs and desires through production, distribution, consumption.

विषय क्षेत्र निर्धारण टिप्पणी (Scope Note)

बहुत से शीर्षकों के नीचे उनका विषय क्षेत्र निर्धारण करने वाली टिप्पणियां दी गई हैं जिनके अन्तर्गत उस विषय और उसके उपविभाजनों की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है । उदाहरणार्थ :

617.882 Diseases of aural internal ears.
Diseases of cochles, labyrinths, semicircular canals, vestibules.

उदाहरण टिप्पणी (Example Note)

कुछ शीर्षकों के नीचे उनके आशय को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण देकर समझाने का प्रयत्न किया गया है । उदाहरणार्थ -

025.1792 Books min raised characters. Example: braille

333.3234 Qualified ownership.
Example: entails, life estates.

समावेश टिप्पणी (Inclusion Note)

कुछ शीर्षकों के नीचे कुछ अधीनस्थ विषयों का उल्लेख समावेश टिप्पणी द्वारा किया गया है हालांकि ये विषय स्पष्ट रुप से इस शीर्षक के भाग नहीं होते हैं । उदाहरणार्थ : -

023.9 Elements of personnel administration,
Including staff manuals, rules, codes,

341.751 Money and banking including monetary exchange.

अनुदेश टिप्पणियाँ (Instruction Notes)

अनुसूची में निम्नलिखित प्रकार की अनुदेशात्मक टिप्पणियाँ दी गई हैं:-

1. यहाँ वर्गीकृत कीजिए टिप्पणी	Class here notes
2. वैकल्पिक प्रावधान	Optional provision
3. सहायक सारणियों से जोड़िये टिप्पणी	Add from auxiliary table notes
4. अनुसूची से जोड़िये टिप्पणी	Add from schedules notes
5. सहायक सारणियों एवं अनुसूचियों से जोड़िये टिप्पणी	Add from both table and schedules notes.
6. अन्यत्र वर्गीकृत कीजिए टिप्पणी	Class elsewhere note
7. अन्तर्निर्देश टिप्पणी	Cross references.
8. पुराना वर्गांक टिप्पणी	Former Class Number notes.
9. स्थगित वर्गांक टिप्पणी	Number discontinued notes.

इन टिप्पणियों के उदाहरण निम्न प्रकार है:-

1. 020.9	Historical and geographical treatment, class here comparative librarianship.
2. 303.38	Public opinion Class here attitudes, attitude formation and change
3. 224.37	Baruch Use of this number is optional, prefer 229.5
4. 331.291-299	Geographical treatment Add 'Areas' notation 1-9 from table 2 to base number 331.29.
5. 220.8	Non-religious subjects treated in Bible Add 001-999 in Bible 220.85.
6. 910.1	Topical geography Add 001-899 to base number 910.1 … then Add 0 and to the result add 'Areas' Notation 1-9 from table 2.
7. 220.91	Geography Class atlases and maps in 912.122.
011.38	Sound recordings, Class sound film in 011.37.
8. 580	Botanical Sciences For Paleobotany See 561

588.2	Musci (True mosses).
	For sphagnales See 588.1
9. 287.5	Methodist Churches in British Isles
	(Formerly 287.97).
10. 001.6404	Mini-computers
[.64042-.64044]	Analogue and digital
	Number discontinued class in 001.64.

संक्षिप्त प्रश्न: -

निम्नलिखित वर्ग संख्याओं को अनुसूचियों (खण्ड 2) में देखिए तथा प्रत्येक के नीचे जिस प्रकार की टिप्पणी दी गई है उसका नाम बताइये:

100,351.14, 364.162, 616.125, 616.12, 320.12, 376.91-99,363. [.351-.356]

अभ्यास काल में विद्यार्थी को सदैव अनुकमणी की अपेक्षा अनुसूचियों में विषय ढूंढने का प्रयास करना चाहिये । इस प्रकार उसे अनेक विषयों एवं उप विषयों के बारे में जानकारी मिल जाती है ।

ताराकंन (Asterisk)

कुछ अंकनों को तारांकित किया गया है तथा उनके प्रयोग सम्बन्धी निर्देश पाद टिप्पणी द्वारा स्पष्ट किये गये हैं । उदाहरणार्थ : -

891.2.*Sanskrit

पाद टिप्पणी:

Add to base number as instructed under 810-890.

दशमलव चिन्ह एवं रिक्त स्थान (Dot and Space)

दशमलव वर्गीकरण में ज्ञान के उपविभाजन के लिए दशमलव भिन्न विधि (Decimal) का प्रयोग किया गया है । दशमलव भिन्न का अर्थ यह होता है कि प्रत्येक अंक दशमलव से विभाजित माना जाता है । किन्तु यह वैचारिक स्तर (Idea Plan) तक ही सीमित है । केवल पढ़ते, सोचते एवं विचार करते समय ही यह परिकल्पना की जाती है कि वर्गांक का प्रत्येक अंक दशमलवों द्वारा विभाजित है । किन्तु जब इसे वर्गांक के अंकन स्तर (Notational plane) पर व्यक्त किया जाता है, तब व्यवहार की सुविधा के लिए हर अंक के दशमलव बिन्दु नहीं लगाया जाता क्योंकि ऐसा करने पर अंकन व्यवस्था पर बहुत भार पड़ेगा तथा वर्गांक अनावश्यक रुप से लम्बा हो जायेगा । दशमलव भिन्न के प्रयोग के कारण वर्गांक के प्रत्येक अंक का दशमलव अंकों की भाँति उच्चारण किया जाता है, जैसे 512 का उच्चारण पाँच एक दो है न कि पांच सौ बारह । साधारण शब्दों में इनका उच्चारण टेलीफोन अंकों की भाँति किया जाता है । इसी प्रकार यदि वर्गांक छह अंकों से बड़ा हो तो छठे एवं सातवें अंक के बीच एक अक्षर की जगह छोड़ी जाती है । इसी प्रकार नवें तथा दशवें अंक के मध्य जगह छोड़ी जाती है । इसी प्रकार तीन-तीन अंकों के बाद जगह छोड़ने का प्रावधान है । उदाहरणार्थ : -

328.306 01

345. 411 016 3

दशमलव बिन्दु व कुछ जगह छोड़ना दोनों ही दृष्टि को आराम देने के लिए होते हैं । इनका अन्यथा कोई लाभ नहीं होता। उपर्युक्त सभी निर्देशों का प्रयोग सावधानी पूर्वक करने से सही वर्गांक बनाने में सुविधा होती है ।

खण्ड 3. सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index)

दशमलव वर्गीकरण की एक मुख्य विशेषता इसकी सापेक्ष अनुक्रमणिका है । सापेक्षकता का अर्थ है कि अनुसूचियों में अनेक स्थानों में बिखरे एक ही विषय के विभिन्न पक्षों को अनुक्रमणिका में एक ही विषय शीर्षक के अन्तर्गत समाविष्ट करना और उनके विभिन्न स्थानों को वर्गांकों द्वारा सूचित करना । यह अनुक्रमणिका तीसरे खण्ड के रूप में 1217 पृष्ठों में दी गई है । इसके प्रयोग की विधि का वर्णन इसी अध्याय में अनुक्रमणिका का प्रयोग शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है ।

4. तीनों संक्षेपकों का प्रयोग (Use of three summaries)

खण्ड - 1 में पृष्ठ 471-482 पर अनुसूचियों मे विभाजित ज्ञानजगत को तीन संक्षेपकों के रुप में दिया गया है । प्रथम संक्षेपक में ज्ञानजगत मे 10 भागों में, द्वितीय संक्षेपक में 100 भागों में तथा तृतीय संक्षेपक में 1000 भागों में विभाजित किया गया है । विद्यार्थियों को प्रथम एवं द्वितीय संक्षेपक के विभाजन को याद रखने का प्रयत्न करना चाहिये । इसी प्रकार विभिन्न विषयों के मुख्य पक्षों की जानकारी प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को तीनों संक्षेपकों का नियमित अवलोकन करते रहना चाहिए । परन्तु यह बात विशेषता ध्यान में रखनी चाहिये कि संक्षेपकों द्वारा किसी सम्भावित वर्गांक तक तो जा सकता है किन्तु उनमें विषयों के सूक्ष्म विषयान्तरों का समावेश नहीं होता ।

5. अनुक्रमणिका व प्रयोग (Use of Index)

ड्यूई दशमलव वर्गीकरण के तृतीय खण्ड के रूप में सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index) दी गई है । इसके सही उपयोग हेतु वर्गकार को इसकी संरचना एवं प्रयोग विधि से परिचित होना आवश्यक है । अनुक्रमणिका में प्रविष्टियों में शब्द प्रति शब्द (Word by word) अनुवर्णक्रम (Alphabetical order) में व्यवस्थित किया गया है । मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये पदों की प्रविष्टियों को भी समूह के रूप में अनुवर्णक्रम से व्यवस्थित किया गया है । अनुक्रमणिका में दिये गये अनुच्छेदों का अनुसूची के अनुच्छेदों के समान ही सोपान - कृमिक महत्व है । योजक चिन्ह से जुडें हुए (Hyphenated) शब्द एक ही संयुक्त पद के समान माने गये हैं । जैसे High-protein, अनुक्रमणिका में मुख्य अनुसूचियों तथा सहायक सारणियों में प्रस्तुत प्राय : समस्त विषयों तथा प्रकरणों सहित सभी सम्भावित पर्यायवाची शब्दों को सम्मिलित किया गया है, जिससे वर्गकार को किसी भी विषय के संभावित वर्गांक को अनुसूची में खोज निकालने की सुविधा होती है और यह भी ज्ञात होता है कि कौन सा विषय किस मुख्य वर्ग में व्यवस्थित किया गया है ।

एक ही विषय या प्रकरण के विभिन्न पहलुओं को जो अनुसूचियों व सारणियों में अलग - अलग स्थानों पर बिखरे हुये रहते है, अनुक्रमणी में उसी विषय या प्रकरण के नाम के अन्तर्गत एक ही स्थान पर एकत्र कर दिया गया है । तथा अनुसूचियों व सारणियों में उनका स्थान या संदर्भ बता दिया गया है । इस संदर्भ की सहायता से वर्गकार अनुसूचि में ठीक स्थान पर पहुँच जाता है । उदाहरणार्थ, यदि वर्गकार Library शब्द के अन्तर्गत देखेगा तो उसे पुस्तकालय (Library) से संबंधित सभी पहलुओं या उप प्रकरणों का एक ही स्थान पर उल्लेख मिल जायेगा :

Library

Administration	025.1
Aide positions	023.3
Areas civic art	711.57
Assistant positions	023.3
Boards	021.82 आदि

अनुक्रमणी में अनेक स्थानों पर अनेक पदों व शब्दों के पर्यायवाची या संबंधित पदों व शब्दों को देखने के निर्देश दिये गये हैं । अर्थात्, वर्गकार को यह सलाह दी गई है कि वह अमुक:शब्द या पद के लिये अमुक शब्द को देखे ।

उदाहरणार्थ,

Motor scooter see Motorcycles

Spectacles see Eyeglasses

Homes see Dwellings

Hindu arts see South Asian arts

Hippies see classes.

यदि वर्गकार को कोई विषय या प्रकरण अनुक्रमणी में नहीं मिलता है तो उसे उस विषय या प्रकरण को उसके पर्यायवाची शब्द या पद के अन्तर्गत तलाश करना चाहिये अथवा उसी मूल के किसी अन्य शब्द के अन्तर्गत या उस से संबंधित किसी अन्य शब्द के अन्तर्गत ढूंढना चाहिये । जैसे, अनुक्रमणी में Female Education पद का उल्लेख नहीं है किन्तु इसके पर्यायवाची Woman Education के अन्तर्गत तलाश करने पर इस विषय की वर्ग संख्या प्राप्त हो जाती है । यदि कोई शब्द उसके एक वचन के रुप में या उसके एक वचन के अन्तर्गत उससे संबंधित प्रकरण प्राप्त न हो तो उसे उसके बहुवचन के रुप में तलाश करना चाहिये । जैसे Woman को Women से Dictionary को Dictionaries से, **Bibliography** को Bibliographies से Biography को Biographies से तलाश करना चाहिये ।

विशेषण तथा संज्ञा के योग से जिन पदों का निर्माण होता है उन पदों को सामान्य रुप से उनके प्रथम -शब्द (विशेषण) से तलाश करना चाहिये । जैसे, Civil engineering, को Civil से, Public administration को Public शब्द से, Political history को Political शब्द से तलाश करना चाहिये । यदि इस प्रकार का कोई पद इस सीधे रूप से तलाश करने पर नहीं मिले तो उसे संज्ञा शब्द से तलाश करना चाहिये । जैसे, Anglican bishops को केवल संज्ञा शब्द Bishops से तथा Apple pies को केवल संज्ञा शब्द Pies के अन्तर गत तलाश करना चाहिये ।

अनुक्रमणिका में अनेक स्थानों पर एक से अधिक शब्दों द्वारा बनाए गये पदों के संक्षिप्त रूपों का प्रयोंग किया गया है जैसे USSR, NATO, SEATO, UNESCO. इस प्रकार के सभी संक्षिप्त रूपों की प्रत्येक वर्ण के प्रारंभ में ही वर्णानुक्रम से व्यवस्थित किया गया है । जैसे. NATO को N वर्ण के प्रारंभ में ।

अनुक्रमणिका में प्रयोग किये गये सभी संक्षिप्त रूपों के विस्तृत स्वरुपों की सूची अनुक्रमणिका के प्रारंभ में ही पृष्ठ XI से XIII तक दी गई है ।

यह आवश्यक नहीं है, कि अनुक्रमणिका में उन सभी विषयों एवं प्रकरणों की प्रविष्टि उपलब्ध हों, जो कि अनुसूचियों में दियें गये हैं । अनुक्रमणिका में व्यक्तियों, शहरों, संस्थाओं, खनिजों, वनस्पतियों, जानवरों, रासायनिक यौगिकों, दवाओं आदि के नाम नहीं शामिल किये गये हैं ।

वर्गकार को अनुक्रमणिका का प्रयोग कम से कम करना चाहिये तथा यह बात विशेष रुप से ध्यान में रखनी चाहिये कि सारणियों तथा अनुसूचियों में वर्गांकों की जाँच किये बिना ही ग्रन्थों का वर्गीकरण केवल अनुक्रमणिका की सहायता से नहीं करना चाहिये । इसके अलावा अनुक्रमणिका में अभीष्ट विषय के सामने मुद्रित अंकन का उसके सभी निर्देशों (Various references) की जांच किये बिना प्रयोग नहीं करना चाहिये ।

अनुक्रमणिका में जिन वर्ग संख्याओं के पहले (– dash) का चिन्ह लगा हो, अथवा जो पद टेढ़े अक्षरों (Italics) में मुद्रित हों उन्हें अनुसूचियों के बजाय सारणियों में देखना चाहिए । जैसे जिन अंकनों के पूर्व “S.S–” लिखा है, उन्हे सारणी 1– मानक उप विभाजन सारणी, "area–" लिखा हो उन्हें सारणी 2 – भौगोलिक उपविभाजन सारणी, जिनके पूर्व “Lang. –” लिखा हो उन्हें सारणी - 6 भाषाओं में देखा जाना चाहिए । इन अंकनों का प्रयोग अकेले नहीं किया जाता है, बल्कि अनुसूची में दिये गये अंकनों के साथ जोड़कर प्रयोग में लाया जाता है ।

संक्षिप्त प्रश्न

(क) अनुक्रमणिका में निम्नलिखित विषयों व प्रकरणों की वर्ग संख्याओं को तलाश करके बताइये -Foreign trade, Physical geology, Political Parties, Animal Husbandry, Analytical Chemistry, Adult education, Aerial flights, Bridal customs, Sea cows, Adhesive plasters, DDT, NATO, Library accounting, Family history, Family libraries.

(ख) अनुक्रमणिका में प्रयोग किये गये निम्नलिखित संक्षिप्त रूपों के विस्तृत रुपों को बताइये । r.e.n., lit. sub., ASSR, Phys., mech.

6. वर्गांक निर्माण विधि (Assigning Class Number)

क्रियात्मक वर्गीकरण में मुख्यत : दो कार्य किए जाते हैं । प्रथम वर्गीकृत किये जाने वाले ग्रंथ के विशिष्ट विषय (Specific subject) का निर्धारण तथा निर्धारित विशिष्ट विषय को उचित अंकन का आबंटन । यदि ग्रंथ के विशिष्ट विषय के निर्धारण में ही किसी प्रकार की त्रुटि हो जाये, तो उसे सही अंकन का आंवटन सम्भव नहीं होगा । वहां विशिष्ट विषय निर्धारण बौद्धिक कार्य हैं वहीं अंकन का आंवटन एक यांत्रिक प्रक्रिया है ।

ग्रंथ के विशिष्ट विषय का निर्धारण करते समय ग्रंथ के निम्नलिखित भागों का अवलोकन किया जाना चाहिये : -

1. ग्रंथ की आख्या

2. ग्रंथ की उपाख्या
3. ग्रंथ की प्रस्तावना एवं प्राक्कथन
4. ग्रंथ की विषय सूची
5. प्रकाशकीय अतिशंसा (Blurb)
6. ग्रंथ का मूल पाठ (Text)

ग्रंथ के इन भागों के अतिरिक्त वर्गकार आवश्यकतानुसार ग्रन्थ समीक्षाओं, ग्रन्थपरक स्त्रोतों (Bibliographical tools) तथा विषय विशेषज्ञों की सहायता भी ग्रन्थ का विषय निर्धारण करने में ले सकता है ।

ग्रंथ के विशिष्ट विषय का निर्धारण करने के बाद वास्तविक वर्गीकरण का कार्य प्रारम्भ होता है । वर्गीकरण करते समय वर्गकार को ज्ञान - जगत की संरचना तथा वर्गीकरण की प्रयोग विधि से परिचित होना आवश्यक है । इस हेतु वर्गकार को तीनों संक्षेपकों का अध्ययन एवं सतत् प्रयोग करते रहना चाहिये । उदाहरणार्थ - भौतिकशास्त्र की पाठ्य पुस्तक (A text book of Physics)मे वर्गकृत करने के लिए द्वितीय संक्षेपक अथवा अनुक्रमणिका की सहायता से Physics का वर्गांक 530 प्राप्त करते हैं । जैसा कि पर्व में उल्लेख किया गया है कि केवल अनुक्रमणिका की सहायता से प्राप्त किये गये वर्गांक को ही अंतिम रूप से स्वीकार नहीं कर लेना चाहिये बल्कि इस वर्गांक की अनुसूची में जांच करके ही उक्त पुस्तक को वर्गांक 530 प्रदान किया जायेगा ।

वर्गकार की सहायता हेतु अनुसूची में कई स्थानों पर विशिष्ट विषय उप खण्डों का सारांश (Summary) भी प्रारम्भ में प्रदान किया गया है । उदाहरणार्थ 5155 Analysis के उपखण्डों का सारांश अनुसूची के पृष्ठ 626 पर दिया गया है ।

कभी -कभी वर्गकार को वर्गांक निर्माण में अपनी निर्णय क्षमता का भी प्रयोग करना पड़ता है । उदाहरणार्थ Cataloguing in University Libraries नामक ग्रन्थ का वर्गीकरण करते समय वर्गकार को Cataloguing का अंकन 025.3 तथा University Libraries का अंकन 027.7 प्राप्त होता है तथा ड्यूई दशमलव वर्गीकरण में इन दोनों अंकनों को जोड़ने का कोई प्रावधान नहीं है । इसलिए वर्गकार को दोनों में से किसी एक वर्गांक का चयन करना होता है । ड्यूई दशमलव वर्गीकरण की सम्पादकीय नीति के अनुसार दोनों वर्गांकों में से जो वर्गांक अधिक मूर्त (concrete) होगा, जो कि सामान्यतः : गणनात्मक क्रम में बाद में आता है, उसका चयन किया जाना चाहिये । इस प्रकार इस ग्रंथ का वर्गांक 027.7 होगा ।

अनुसूचियों में कई स्थानों पर विषय की अनेक विशेषताओं के आधार पर किये जाने वाले विभाजनों का सही उद्धरण क्रम

(citation order) बताने वाली अग्रताक्रम तालिकाऐं (Tables of precedence) दी गई जिनसे वर्गकार को अंकन के चयन में मार्ग दर्शन मिलता है। इसके फलस्वरूप वर्गांक के निर्माण में एकरूपता एवं सुसंगति बनी रहती है । ऐंसी अग्रताक्रम तालिकाएं अनुसूची में 150, 362, 757, 800 आदि वर्गों तथा सारणी 1 : मानक उपविभाजन सारणी में भी ही गई हैं । एक से अधिक विषयों से सम्बन्धित ग्रथों को या तो विस्तृत (Broad) वर्ग में वर्गीकृत किया जाता है अथवा यहां उस ग्रंथ का अधिक प्रयोग हो वहां वर्गीकृत किया जाता है तथा दूसरे विषय को छोड़ दिया जाता है ।

7. प्रायोगिक वर्गीकरण के नियम (Rules for Practical Classification)

वर्गाकार को प्रायोगिक वर्गीकरण करते समय निम्नलिखित नियमों का ध्यान में रखना चाहिये-

1. प्रत्येक ग्रन्थ को उस विषय के अन्तर्गत रखना चाहिये, जो पाठकों के लिए सर्वाधिक उपयोगी हो । ग्रन्थ को उपयुक्त स्थान प्रदान करने के लिए समुचित युक्ति एवं तर्क का सहारा लेना चाहिए ।
2. ग्रन्थ का वर्गीकरण पहले उसके विशिष्ट विषय के अनुसार करना चाहिए तत्पश्चात जिस दृष्टिकोण अथवा रूप (Form) में उसका प्रयोग गया है उसे व्यक्त करना चाहिए । परन्तु सामान्य कृतियों (Generalities) तथा साहित्य में वहां रूप है यह नियम लागू नहीं होता । उदाहरणार्थ " गणित का इतिहास " नामक ग्रंथ गणित में वर्गीकृत किया जायेगा न कि इतिहास में । इसी प्रकार जीवन चरित (Biography) 920 तथा ग्रन्थ सूची (Bibliography) 016 का रूप प्रदर्शक वर्गों की दृष्टि से प्रयोग करना चाहिए ।
3. ग्रन्थ को मात्र आख्या के आधार पर वर्गीकृत नहीं करना चाहिए । कुछ अवस्थाओं में यह न केवल अस्पष्ट होती है, बल्कि भ्रामक भी होती है । इसलिए पुस्तक का अन्तर्विषय, ठीक-ठीक जानने के लिए ग्रंथ की उपआख्या, विषय सूची, प्राक्कथन तथा भूमिका आदि का अध्ययन करना चाहिए । उदाहरणार्थ, पंडित जवाहरलाल नेहरू कृत Discovery of India नामक ग्रन्थ आख्या देखकर भूगोल का ग्रंथ लगता है जबकि वास्तव में यह प्राचीन भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित ग्रंथ है ।
4. जब कोई ग्रंथ विषय के दो या तीन उपविषयों का विवेचन करता है तो उसका उस उपविषय में वर्गीकरण करना चाहिए, जो सबसे प्रमुख हो अथवा जिसमें ग्रंथ की सबसे अधिक उपादेयता सिद्ध हो सके । यदि सभी उपविषय समान महत्व के हों तो हमेशा विस्तृत विषय के अन्तर्गत उसका वर्गीकरण करना चाहिए ।
5. द्विषयी ग्रंथों में यदि उनके विषयों व सापेक्ष महत्व समान हो तो, उनको ऐसे विषय के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए, जिसका अनुसूची में पहले उल्लेख हो ।
6. ग्रंथ का विषय निर्धारित करते समय ग्रंथ की रचना का उद्देश्य एवं लेखक के मंतव्य मे ध्यान में रखना चाहिये । लेखक का मंतव्य अधिकतर ग्रंथ के प्राक्कथन, विषय सूची आदि देखकर माना जा सकता है ।
7. यदि किसी ऐसे विषय से सम्बन्धित ग्रंथ को वर्गीकृत किया जाना हो, जिसके लिए वर्गीकरण प्रणाली में वर्गांक न दिया गया हो तो उस ग्रंथ को ऐसे विषय के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए जो कि उस विषय के सबसे अधिक नजदीक हो ।
8. ग्रंथ को उसके विशिष्ट विषय के अनुसार ही वर्गांक प्रदान करना चाहिए । उदाहरणार्थ Bridges विषय से सम्बन्धित ग्रंथो को Bridges में ही वर्गीकृत किया जाना चाहिये न कि Civil engineering या Engineering में । ये दोनों विषय उस ग्रंथ के विशिष्ट विषय से अधिक विस्तृत हैं ।

9. वर्गीकरण करते समय आने वाली कठिनाइयों, जटिलताओं तथा उनके संबंध में समयानुसार लिए गये निर्णयों का समुचित विवरण रखना चाहिये । उदाहरणार्थ यदि किसी ऐसे विषय के लिए जिसका वर्गांक वर्गीकरण पद्धति में नहीं दिया हुआ है वर्गांक का निर्माण वर्गकार द्वारा किया गया हो, तो ऐसे निर्णयों का लेखा जोखा रखना जरुरी है । इससे यह लाभ होता है कि उस विषय पर आने वाले अन्य ग्रंथ को भी वहीं वर्गांक प्रदान किया जा सकेगा । इससे वर्गीकरण में एकरूपता बनी रहती है ।

10. अनुवाद, समीक्षा, कुंजी, टीका तथा प्रश्नोत्तर एवं किसी ग्रंथ के परिशिष्ट से सम्बन्धित ग्रंथो का मौलिक ग्रंथो के साथ ही वर्गीकरण किया जाना चाहिए क्योंकि उसी स्थान पर उनका सर्वाधिक प्रयोग हो सकता है ।

11. केवल अनुक्रमणिका की सहायता से ही किसी ग्रंथ को कभी वर्गांक नहीं प्रदान करना चाहिए अर्थात् अनुक्रमणिका द्वारा प्राप्त वर्गांक मे अनुसूची से प्रमाणित करने के बाद ही प्रयोग में लाना चाहिये ।

8. अनुसूची एवं अनुक्रमणिका परिचय

(Acquaintance with Schedules & Relative Index)

अनुसूची से परिचय के अन्तर्गत केवल उन्हीं सामान्य ग्रंथों का वर्गीकरण करना सीखेंगे, जिनमें कि किसी भी प्रकार की सहायक सारणियाँ के प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती । ऐसे ग्रंथों के वर्गीकरण में ड्यूई दशमलव वर्गीकरण खण्ड 1 पृष्ठ 471 - 482 पर दिये गये तीनों संक्षेपकों, खण्ड 3 सापेक्ष अनुक्रमणिका तथा अनुसूची का ही प्रयोग होता है ।

शीर्षक 1 Female Education 376

महिला शिक्षा

सर्वप्रथम ग्रंथ का विषय निर्धारित किया जाता है । ग्रंथ की आख्या से ही स्पष्ट है कि महिला शिक्षा, शिक्षा विषय की ही एक शाखा है । द्वितीय संक्षेपक का अवलोकन करने पर अंकन 370 के सामने Education पद मिलता है तथा तृतीय संक्षेपक में 376 के सामने Education of women पद मिलता है । जो कि Female Education का ही पर्यायवाची है । अनुसूची में अंकन 376 के सामने भी Education of women पद मिलता है इस प्रकार इस ग्रंथ का वर्गांक 376 ही होगा ।

इसी ग्रंथ का वर्गांक ड्यूई का दशमलव वर्गीकरण खण्ड 3 सापेक्ष अनुक्रमणिका की सहायता से भी बनाया जा सकता । अनुक्रमणिका में Female पद के अन्तर्गत Education नहीं मिलता परन्तु इसी के नीचे Females के अन्तर्गत woman शब्द के अन्तर्गत देखने का निर्देश मिलता है । Woman शब्द के नीचे देखने पर Woman, Education का अंकन 376 मिलता है । चूँकि मात्र सापेक्षिक अनुक्रमणिका की सहायता से वर्गांक बनाना वर्जित है, इसीलिए अनुसूची में अंकन 376 के सामने Education of woman पद देखकर व प्रमाणित करके ग्रंथ व अंतिम वर्गांक 376 बनाया आयेगा।

शीर्षक - 2 मजदूर संघ Trade Unions 331.88

इस ग्रंथ का विषय ट्रेड यूनियन ही है जो कि Labour Economics का ही एक भाग है । द्वितीय संक्षेपक में अंकन 330 के सामने Economics तथा तृतीय संक्षेपक में अंकन 331 के सामने Labour

Economics पद मिलता है । चूंकि तृतीय संक्षेपक में ज्ञान जगत के मात्र 1000 भागों का अंकन दिया गया है इसलिए इसके बाद का अंकन प्राप्त करने के लिए अनुसूची में अंकन 331 के उप खण्डों को देखने पर अंकन 331.88 के सामने Labor Unions (Trade Unions) पद मिलता है । अर्थात् Laborunion, trade unions का ही पर्यायवाची पद है । इस प्रकार इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक 331.88 ही होगा । सापेक्ष अनुक्रमणिका में trade union के अन्तर्गत खोजने पर Labor Union के अन्तर्गत देखने का निर्देश प्राप्त होता है । अनुक्रमणिका में पद Labor Union देखने पर इसके अन्तर्गत 331.88 वर्गांक प्राप्त होता है । इस अंकन को अनुसूची से प्रमाणित करने पर अंकन 331.88 के सामने Labor Unions(Trade Unions) पद मिलता है । इस प्रकार इस ग्रन्थ का अंतिम वर्गांक 331.88 ही होगा । टिप्पणी : - ड्यूई दशमलव वर्गीकरण में अमेरिकन इंगलिश के प्रयोग के कारण Labor के हिज्जे Labor दिये गये हैं ।

शीर्षक 3

Hindi Literature 891.43

हिन्दी साहित्य

शीर्षक हिन्दी साहित्य दो पदों Hindi Literature के संयोजन से बना है, जिसमें पद Hindi विशेषण है एवं पद Literature संज्ञा है । जैसा कि पहले कहा जा चुका है, ऐसे शीर्षक जो कि विशेषण व संज्ञा के संयोजन से बनते है उनको अनुक्रमणिका में उनके सीधे रूप में देखना चाहिए अर्थात् अभिगम (approach) विशेषण वाले पद से करनी चाहिए संज्ञा वाले पद से नहीं । किन्तु यदि ये विशेषण से न मिले तों संज्ञा शब्द से ढूंढना चाहिये ।

उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक बनाने के लिए द्वितीय संक्षेपक में अंक 800 के नीचे विभिन्न प्रकार के साहित्यों को अंकन 810 - 880 के अन्तर्गत दिखाया गया है एवं 890 के अन्तर्गत Literature of other Languages पद मिलता है । इसी प्रकार तृतीय संक्षेपक में अंकन 891 के सामने East Indo-European and Celtic पद मिलता है । अनुसूची में अंकन 891 के उप विभाजन देखने पर अंकन 891.43 के सामने पद Western Hindi Literature Hindi मिलते हैं । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होंगा । अनुक्रमणिका की सहायता से इस ग्रंथ का वर्गांक बनाने के लिए हिंन्दी (Hindi) के अन्तर्गत Literature पद के सामने अंकन 891.43 दिया गया है । अनुसूची में अंकन 891.43 के देखने पर उनके सामने पद Western Hindi Literature Hindi मिलते हैं ।

यहां यह उल्लेखनीय है कि अनुक्रमणिका में Literature पद के नीचे देखने पर हमें Hindi पद नहीं मिलता है ।

शीर्षक 4

News Reporting 070.43

समाचार लेखन

समाचार लेखन,पत्रकारिता विषय का ही एक अंग है । द्वितीय एवं तृतीय संक्षेपको में अंकन 070 के सामने पद Journalism, Publishing, Newspapers मिलते है । अनुसूची में 070 के नीचे देखने पर 070.43 के सामने News gathering and reporting पद मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा ।

इसी प्रकार अनुक्रमणिका में पद News के अन्तर्गत gathering के सामने अंक 070.43 मिलता है । अनुसूची से प्रमाणित करने पर अंकन 070.43 के सामने पद News gathering & Reporting मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा ।

शीर्षक 5

Kidney diseases 616.61

किडनी की बिमारी

आख्या से ही स्पष्ट है कि यह ग्रंथ आयुर्विज्ञान विषय से सम्बन्धित है । द्वितीय संक्षेपक में अंकन 610 के सामने पद Medical Sciences Medicines दिया गया है तथा तृतीय संक्षेपक में अंकन 616 के सामने पद Diseases दिया गया है । अनुसूची में अंकन 616 के उपविभाजनों मे देखने पर अंकन 616.61 के सामने पद 'kidneys and ureters' मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा ।

अनुक्रमणिका में पद Kidneys के नीचे Diseases के सामने अंकन 616.61 दिया गया है । अनुसूची में भी 616.61 के सामने पद of kidneys and ureters मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम बगांक होगा!

शीर्षक 6

Fishing Industries 639.2

मत्स्य उद्योग

इस शीर्षक का वर्गीकरण करने में संक्षेपक सहायक नहीं है । इसलिये सापेक्षिक में पद अनुक्रमणिका में पद Fishing Industries के अन्तर्गत देखने पर वर्गांक 639.2-.3 प्राप्त होता । अनुसूची देखने पर वर्गांक 639.2 के सामने पद Commercial fishing, Whaling, Sealing, प्राप्त होता है । इसी के अन्तर्गत Fishing को वर्गीकृत करने का प्रावधान है । इस प्रकार इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक 639.2 होगा ।

शीर्षक 7

Astrophysics 523.01

खगोल - भौतिकी

Astrophysics भौतिक शास्त्र की शाखा नहीं है बल्कि खगोल विद्या की एक शाखा है । द्वितीय संक्षेपक में अंकन 520 के सामने पद Astronomy and allied sciences मिलता है तथा तृतीय संक्षेपक में अंकन 523 के सामने पद Descriptive astronomy मिलता है । अनुसूची में अंकन 523 के उपविभाजनों को देखने पर अंकन 523.01 के सामने पद Astrophysics मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा ।

अनुक्रमणिका में पद Astrophysics के सामने अंकन 523.01 दिया गया है । अनुसूची में भी अंकन 523.01 के सामने पद Astrophysics ही मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा ।

शीर्षक 8

Plywood technology 674.834

प्लाइवुड प्राद्यौगिकी

Plywood technology लकड़ी प्रौद्योगिकी का एक भाग है । तृतीय संक्षेपक में wood technology का अंकन 674 दिया गया है । अनुसूची में अंकन 674 के उपविभाजनों के अन्तर्गत 674.8 में wood Using technology तथा इसी के नीचे अंकन 674.834 के सामने पद Plywood मिलता है जिसका आशय Plywood technology से ही है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा। सापेक्षिक अनुक्रमणिका में पद Plywood के अन्तर्गत देखने पर Manufacturing technology का अंकन 674.834 दिया गया है । अनुसूची में अंकन 674.834 देखने पर हमें Plywood मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा ।

शीर्षक 9

History of Rajasthan =954.4

राजस्थान व इतिहास

राजस्थान भारतवर्ष का एक प्रान्त है तथा भारतवर्ष एशिया महाद्वीप का एक देश है । द्वितीय संक्षेपक में अंकन 950 के सामने पद General History of Asia दिया गया है तथा तृतीय संक्षेपक में 954 के सामने पद South Asia India दिया गया है अर्थात् भारत वर्ष के इतिहास का अंकन 954 दिया गया है । अनुसूची में अंकन 954 के सामने पद South Asia, India ही मिलता है । जिसमें South Asia को तारांकित किया गया है । पाद टिप्पणी में तारांकन के अन्तर्गत Add as instructed under 930–990 का निर्देश दिया गया है । केन्द्रित शीर्षक 930 – 990 में यह निर्देश दिया गया है कि यदि किसी भी देश, प्रेदश आदि का इतिहास बनाना हो तो अंक 9 में भौगोलिक उपविभाजन सारणी से देश प्रदेश का अंकन लाकर जोड़ों । इस प्रकार उस देश, प्रदेश आदि के इतिहास का वर्गांक बन जायेगा । अनुक्रमणिका में Rajasthan, India के सामने area-5 अंकित है । भौगोलिक उपविभाजन सारणी में अंकन-544 के सामने Rajasthan मिलता है । इस प्रकार निर्देशानुसार जोड़ने पर राजस्थान के इतिहास का अन्तिम वर्गांक 9 + 544= 954.4 बनेगा ।

शीर्षक 10

Indian architecture 722.44

भारतीय स्थापत्य कला

स्थापत्य कला, कला की ही एक शाखा है । द्वितीय संक्षेपक में अंकन 700 के सामने पद The Arts व संक्षेपक में अंकन 722 के सामने पद Ancient and oriental architecture मिलता है। अनुसूची में अंकन 722 के उपविभाजनों के अन्तर्गत अंकन 722.44 के सामने Indian शब्द मिलता है जिसका आशय Indian architecture से ही है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वगांक होगा ।

अनुक्रमणिका में पद Indian देखने पर Indic देखने का निर्देश दिया गया है । पद Indic के नीचे Architecture के सामने अंकन 722.44 दिया गया है । अनुसूची में अंकन 722.44 देखने पर उसके सामने पद Indian मिलता है । यही इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक होगा ।

9. सारांश

दशमलव वर्गीकरण पद्धति के आविष्कारक मेलविल ड्यूई का जन्म सन् 1851 में हुआ था । दशमलव वर्गीकरण का प्रथम संस्करण 1876 ई. में हुआ था ।. इसके प्रथम संस्करण में कुल 42 पृष्ठ थे ।

इसका 1 9वां संस्करण तीन खण्डों में है । अर्थात् (1) प्रस्तावना व सारणियाँ (2) अनुसूचियाँ एवं (3) सापेक्ष अनुक्रमणी । खण्ड प्रथम की प्रस्तावना में क्रियात्मक वर्गीकरण के सम्बन्ध में कुछ मार्ग दर्शन किया गया है । तथा सात सहायक सारणियाँ एवं तीन संक्षेषक दिये गये है । खण्ड 2 में विश्व ज्ञान को पहले दस भागों में विभाजित किया है तथा इन दस प्रमुख वर्गों के उपवर्ग तथा उपवर्गों के उपवर्ग वरीयता क्रम में दिये गये है । खण्ड 2 में अनेक विषय शीर्षकों के अन्तर्गत परिभाषायें, व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ, क्षेत्र निर्धारण टिप्पणियाँ व अनके प्रकार मे अनेक टिप्पणियाँ दी गई हैं जिनकों ध्यान से पढ़ कर उन शीर्षको से संबंधित वर्ग संख्याओं का प्रयोग करना चाहिये ताकि किसी विषय मे सही वर्ग संख्या प्रदान की जा सके । खण्ड - 1 में दिये गये तीनों संक्षपों का भी निरंतर अध्ययन करतें रहना चाहिये ताकि विभिन्न विषयों के उपवर्गों की जानकारी मिल जाये ।

इस वर्गीकरण पद्धति में सापेक्ष अनुक्रमणिका का विशेष महत्व है । इसको शब्द प्रतिशब्द वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया हैं । तथा प्रत्येक विषय या प्रकरण से संबंधित सभी पक्षों को जो अनुसूचियों में अनेक स्थानों पर बिखरे हुए है इस अनुक्रमणिका में एक साथ एकत्र कर दिया गया है । इन विषय शीर्षकों व पदों के सामने उनसे संबंधित वर्ग संख्यायें प्रदान की गई हैं । आवश्यकतानुसार अनेक शब्दों व पदों में पर्यायवाची भी दे दिये गये हैं । किन्तु केवल अनुक्रमणिका को ही देखकर वर्गीकरण नहीं करना चाहिए । अपितु अनुक्रमणिका से किसी भी वर्ग संख्या को लेकर उसे अनुसूचियों में देखना चाहिये तथा वहां से उस वर्ग संख्या के अर्थ व क्षेत्र की पूरी जानकारी लेने के बाद ही उस वर्ग संख्या म प्रयोग करना चाहिये ।

ग्रंथ का विषय निर्धारण करने के लिये ग्रंथ के विभिन्न भागों, जैसे आख्या, उपआख्या, प्रस्तावना, विषय तालिका आदि का अवलोकन करना चाहिये । यदि आवश्यकता हो तो ग्रंथ की समीक्षाओं व ग्रंथपरक स्रोतों की भी सहायता ली जा सकती है । वर्गीकरण करते समय वर्गीकरण के सभी सामान्य नियमों का पालन करना चाहिये । किसी भी ग्रंथ का वर्गीकरण सबसे पहले उसके विशिष्ट विषय के अनुसार करना चाहिये उसके बाद जिस दृष्टिकोण व रूप से उसका प्रयोग किया जाता है उसे व्यक्त करना चाहिये ।

10. वर्गीकृत शीर्षक (Worked out Titles)

उपर्युक्त ढंग से समझाई गई विधि द्वारा निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाये गये हैं । आप भी इस विधि द्वारा इन ग्रंथों के वर्गांक बनाइये तथा समाने दिये गये वर्गांक से मिलाइये ।

1.	Theory of information	001.5
2.	Experimental research	001.434
3.	Bibliography of reference books	011.02
4.	Qualities and qualification of library staff	070
5.	Journalism	025.431
6.	Practical Dewey Decimal Classification	025.431
7.	Psychology of uncontrolled emotions	152.432
8.	Apperception Psychology	153.734
9.	Buddhist scriptures	294.382

10.	Physics and religion	215.3
11.	War ethics	172.42
12.	Arya Samaj	294.5563
13.	Social Planning	307 or 361.2
14.	Population statistics	312
15.	Labour economics	331
16.	Labour disputes	331.89
17.	Jurisprudence	340.1
18.	International law	341
19.	Currency law	343.032
20.	Press law	343.0998
21.	War economics	355.0273
22.	Juvenile delinquent	364.36
23.	Life insurance	368.32
24.	Multilinear algebra	512.5
25.	Hindi language	491.43
26.	Functional analysis	515.7
27.	Inorganic chemistry of iodine	546.734
28.	Hydrology of fresh water	551.48
29.	Ocean biology	574.92
30.	Synecology of animals	591.524
31.	Human anatomy of brain	611.81
32.	Surgery of nose	617.523
33.	Optic nerves disease	617.73
34.	Geriatric diseases	618.97
35.	Animal husbandry	636
36.	German goats	636.393
37.	Bronze sculpture	731.456
38.	Decoration of drawing room	747.75
39.	One day international cricket match	796.35865
40.	Recreational flight	797.53
41.	Criticism of Macbeth of Willam Shakespeare	822.3316
42.	Punjabi literature	891.42
43.	Telugu literature	894.827

44.	History of man	573.2
45.	History of national flag	929.92
46.	History of Ottoman empire	956
47.	World History	909
48.	History of East India Company	954.031
49.	History of Vedic India	934.02
50.	History of Khilzi dynasty	954.0234

11. अभ्यास के लिये शीर्षक

निम्नलिखित ग्रथों के वर्गांक बनाइये :

1. Introduction of Colon Classification
2. Optical surgery
3. Italian ephemerides
4. Armed services outdoor cookery
5. Communication theory
6. Cataloguing of non-book material
7. Inter-caste marriages
8. Photography as a hobby
9. Elementary statistics
10. Social riots
11. Tamil literature
12. William Shakespeare
13. Mathematics of programming
14. Statistics on industrial accidents
15. Art of book binding
16. Research methodology
17. Nuclear physics
18. Family budgeting
19. Punched card data processing
20. Chemical engineering
21. Steam locomotives
22. Critical appraisal of sonnets of Shakespeare
23. Plastic surgery of face
24. Public Health law

25. Repair of canals
26. Eye diseases
27. International politics
28. Bibliography of books for young readers
29. Stamps collection
30. Wages
31. Animal performances in circus
32. Advanced accounting
33. Velocity of sound
34. Girl guides
35. Machine translation
36. Aims of higher education
37. Magnetic surveys
38. Correspondence courses in agriculture
39. Repair of Shoes
40. International postal system
41. Theory of satellites
42. Chemistry and religion
43. Astronautical engineering
44. VTOL Craft
45. Foam glass
46. Narrow gauge railway system
47. Snake poison
48. Experimental medicine
49. Wireless communication
50. Italian ephemerides

12. ग्रंथ सूची

पाठ 4 के अन्त में

कोर्स - 2B पुस्तकालय वर्गीकरण -प्रायोगिक:
दशमलव वर्गीकरण
इकाई - 2 दशमलव वर्गीकरण : प्रायोगिक - 11
सारणी - 1 मानक उपविभाजन एवं
सारणी - 2 भौगोलिक उपविभाजन व प्रयोग

उद्देश्य (Objectives)

1. सारणी 1 :मानक उपविभाजनों के अर्थ तथा उनके प्रयोग का ज्ञान कराना ।
2. सारणी 2 :भौगोलिक उपविभाजनों के प्रयोग का ज्ञान कराना ।

संरचना / वस्तु (Structure)

1. मानक उपविभाजनों का अर्थ एवं परिभाषा
2. मानक उपविभाजनों के प्रकार
3. मानक उपविभाजनों के प्रयोग पर आवश्यक प्रतिबन्ध
4. मानक उपविभाजनों के प्रयोग के बारे में अन्य जानकारी
5. कुछ मानक उपविभाजनों के बारे में विशेष जानकारी
6. मानक उपविभाजनों पर आधारित शीर्षकों का वर्गीकरण
7. मानक उपयिभाजनों का विस्तार
8. भौगोलिक उपविभाजन
9. भौगोलिक इकाई का अंकन ढूँढने की विधि
10. भौगोलिक उपविभाजनों के प्रयोग के नियम
11. सारांश
12. भौगोलिक उपविभाजनों पर आधारित शीर्षकों का वर्गीकरण
13. अभ्यास के लिये शीर्षक
14. ग्रंथ सूची

1. मानक उपविभाजन अर्थ एवं परिभाषा

(Standard Subdivisions: Meaning and Definition)

ग्रन्थों के वर्गीकरण का मुख्य आधार विषय होता है, किन्तु उसके व्यवस्थापन में विषय के प्रतिपादन की शैली को भी ध्यान में रखना आवश्यक होता । कुछ ग्रंथ विषय के सैद्धान्तिक पहलू पर आधारित होते हैं, जबकि कुछ ग्रंथ मात्र विषय की रूपरेखा का निरूपण करते हैं । वही कुछ अन्य ग्रंथ विषय के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं । कुछ ग्रंथ विषय क़े शब्दकोष (Dictionary), अब्दकोष, (Year Book) विश्वकोष (Encyclopaedia), संकलन (Collection) आदि के रूप में प्रकाशित होते हैं । इनमे ग्रंथ को प्रस्तुत करने की विधि एवं विषय के विवेचन के रूप को विशेष महत्व दिया जाता है । सभी वर्गीकरण पद्धतियों में विषय के विवरण के इन स्वरूपों को दिखाने के लिये रूप विभाजन

की विशेष व्यवस्था की गई है । इसे ही ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति में मानक उपविभाजन तथा द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल के नाम से जाना जाता है ।

विषयों अथवा ज्ञान के क्षेत्र में निरूपण के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले रूप सामान्यतया सभी विषयों पर लागू होते हैं, जैसे किसी भी विषय के कोष, विश्वकोष, पत्रिकाएं, ग्रंथ सूचियां, निबन्ध इत्यादि । ऐसे विभिन्न रूपों की सूची व उनके अंक ड्यूई दशमलव वर्गीकरण के प्रथम खण्ड में दिये गये हैं । 19 वें संस्करण में उनकी संख्या 116 है । मुख्य - मुख्य मानक उपविभाजन निम्नलिखित हैं :

–01 Philosophy and theory	दर्शन एवं सिद्धान्त
–02 Miscellany	विविध
–03 Dictionaries, Encyclopaedias Concordance	शब्दकोष, विश्वकोष, शब्दानुक्रमणिकाएं
–04 Special topic of general Applicability	सामान्य प्रयोग के विशिष्ट प्रकरण
–05 Serial publication	सामयिक प्रकाशन
–06 Organization and Management	संस्थाएं एवं व्यवस्थापन
–07 Study and teaching	अध्ययन एवं शिक्षण
–08 History and description Of the subject among Group of persons	व्यक्तियों के समूहों में विषय का इतिहास व वर्णन
–09 History and geographical Treatment	ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विवरण

उपर्युक्त एवं अन्य सभी मानक उपविभाजनों की तालिका ड्यूई दशमलव वर्गीकरण खण्ड -1 के पृष्ठ 1 - 13 पर दी गई है ।

मानक उपविभाजनों का अकेले कोई महत्व नहीं है, अर्थात् ये अपने आप में कोई स्वतंत्र वर्गांक नहीं बनाते हैं । इनका उपयोग अनुसूची में दिये गये वर्गांक के साथ जोड़ कर किया जा सकता है । किसी ग्रंथ के लिए निर्धारित वर्गांक के बारे में यह निश्चय कर लेने के पश्चात् कि यही उसके लिए सर्वाधिक उपयक्त एवं विशिष्ट वर्गांक है, वर्गकार यह देखता है कि वर्गांक को कोई रूप विभाजन की विशिष्टता प्रदान करने की आवश्यकता है या नहीं, जैसे क्या वह ग्रंथ किसी विषय का कोष अथवा विश्वकोष है? क्या उस ग्रंथ में किसी विषय के सिद्धान्तों एवं दर्शन का उल्लेख किया गया है? आदि । यदि ग्रंथ के विषय के प्रतिपादन में कोई ऐसी विशिष्टता है, तो उसके निर्धारित वर्गांक में उपयुक्त मानक - विभाजन के आवश्यक अंक जोड़े जाने चाहिये । प्रत्येक मानक उपविभाजन के पूर्व शून्य (Zero) लगा रहता है तथा शून्य से पर्व एक छोटी आडी रेखा (Dash) लगी रहती है, जो कि प्रयुक्त किये जाने वाले वर्गांक के लिए रिक्त स्थान को प्रकट करती है । मानक उपविभाजनों को वर्गांक के साथ जोड़ते समय इस आड़ी रेखा मे हटा लिया जाता है

2. प्रकार (Types)

मानक विभाजन निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं

1. **बाह्य स्वरूप एवं दृष्टिकोण से सम्बन्धित :** विषय का कई स्वरूपों में हो सकता है । जैसे सारांश (Synopsis) या रूपरेखा (Outline), सामयिक प्रकाशन (Serial publication) लेखों के संग्रह, तालिका या चित्रों के रूप में । इनसे सम्बन्धित मानक उपविभाजन इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं ।
2. **आन्तरिक संरचना एवं दृष्टिकोण से सम्बन्धित :** कई विषयों में विषय वस्तु की प्रस्तुति में समानता होती है जैसे सिद्धान्त, तकनीक, इतिहास, अध्ययन एवं शिक्षण आदि । इनसे सम्बन्धित मानक उपविभाजन इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं ।
3. **पूर्वोक्त श्रेणियों में न आनेवाले मानक उपविभाजन:** कुछ उपविभाजन उपर्युक्त दोनों प्रकार की श्रेणियों के अन्तर्गत नहीं आते । कुछ उपविभाजन किसी विषय से सम्बन्धित प्रक्रियाओं या तकनीकियों को प्रदर्शित करते हैं, वहीं कुछ उपविभाजन केवल संकेतक का कार्य करते हैं, जिनमें अन्य अंक जोड़े जाते हैं । उदाहरणार्थ Text-book of Zoology for Nurses, Mathematics for Engineers आदि शीर्षकों का अंकन '–024 Works for specific types of users' के अन्तर्गत दिय गये निर्देशानुसार सारणी 7 से विशिष्ट विषय से सम्बन्धित व्यक्ति का अंकन लाकर जोड़ा जाता है ।

3. प्रयोग पर आवश्यक प्रतिबन्ध (Important restrictions on its use).

ड्यूई दशमलव वर्गीकरण में वर्गकार द्वारा मानक उपविभाजन के प्रयोग के सम्बन्ध में लगाये गये आवश्यक प्रतिबन्ध निम्न प्रकार हैं :

1 अंकन निर्माण में भ्रांति और गड़बड़ी से बचने के लिए यह आवश्यक है कि जब तक स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया हो, एक मानक उपविभाजन के साथ दूसरा मानक उपविभाजन न जोड़ा जाय । यदि किसी ग्रंथ की विषय वस्तु की वर्ग संख्या के साथ एक से अधिक मानक उपविभाजन का प्रयोग करना उपयुक्त हो तो उनमें से किसी एक मानक उपविभाजन को चुनना पड़ेगा । मानक उपविभाजन सारणी - 1 के प्रारंभ में दी गई Table of Precedence की सहायता से उस मानक उप - विभाजन को निर्धारित किया जा सकता है जिसका उस वर्ग संख्या के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए ।

2. यदि अनुसूची का कोई वर्गांक किसी ग्रंथ में निहित विषय का पूर्ण प्रतिपादन न करके केवल आंशिक रूप से उस विषय का बोध कराता हो और उस वर्गांक के साथ मानक विभाजन अंकों के जोड़ने का कोई स्पष्ट निर्देश न हो, तो वर्गकार को उसके साथ मानक उपविभाजन अंक जोड़ने में सावधानी बरतनी चाहिये । जैसे Serial on the architecture of office building का वर्गांक तो 725.2305 बनाया जा सकता है । किन्तु Architecture of medical office building का वर्गांक बनाने के लिये केवल 725.23 का ही उपयोग करना चाहिये क्योंकि यह वर्गांक Medical office building को केवल आंशिक रूप से प्रदर्शित करता है । संभवत: DDC के 20 वें संस्करण

में Medical office building के लिये कोई अन्य विशिष्ट वर्ग संख्या का निर्माण हो जाये । ऐसी स्थिति में उस नये वर्गांक के साथ 05 जोड़ना ठीक होगा ।

3. यदि मानक उपविभाजन का प्रयोग अनावश्यक हो तो वर्गकार को विषय वर्गांक के साथ उसका प्रयोग नहीं करना चाहिये । जैसे, यदि वर्गांक स्वयं किसी तकनीक से सम्बन्ध रखता है, तो तकनीक से सम्बन्धित मानक उपविभाजन (- 028) उसमे नहीं लगाया जाना चाहिये ।

वर्गकार को चाहिये कि मानक उपविभाजन का प्रयोग करने से पूंव इस बात की अच्छी तरह से जांच कर ले कि कहीं उस विषय से सम्बन्धित तालिकाओं में ही किसी स्थान पर उनका समावेश तो नहीं कर लिया गया है । इस प्रकार के समावेश की अवस्था में मानक उपविभाजन जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती । यदि वर्गांक का अर्थ ही सिद्धान्त अथवा दर्शन हो तो उसमें मानक उपविभाजन -01 का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं होती है । जैसे Political theories and idealogies 320.5 एवं Relative theory 530.11 में theory पद का प्रयोग पहले से ही किया गया । अत : इनके साथ पुन : मानक विभाजन -01 का प्रयोग करना अनावश्यक है ।

4. मानक उपविभाजनों के प्रयोग के बारे में अन्य जानकारी

सभी मानक उपविभाजनों का प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है:

(क) **निर्देशानुसार:** पहले तो द्वितीय खण्ड की अनुसूचियों में उल्लिखित अनेक वर्ग संख्याओं के अन्तर्गत दिये गये विशेष निर्देशों के अनुसार ही इनका प्रयोग करना चाहिये । उदाहरणार्थ, वर्ग संख्या 543 (Analytical Chemistry) के नीचे दिया हुआ निर्देश इस प्रकार है– "Use 543.001-543.009- for Standard subdivisions". इस निर्देश का स्पष्ट अर्थ यह है कि वर्ग संख्या 543 के साथ यदि कोई मानक उपविभाजन जोड़ा जाये तो पहले हम उसके साथ दो शून्य (अर्थात् स्वयं का एक शून्य शामिल करके) लगायें और फिर उसे 543 के साथ जोड़े । उदाहरण Research in Analytical Chemistry=543+0072=543.0072.

वर्ग संख्या 300 (Social Sciences) समाजशास्त्र के अन्तर्गत उल्लिखित निर्देश इस प्रकार है "Use 300.1-300.9 for Standard Subdivisions. "इस निर्देश का अर्थ यह है कि जब कभी हम वर्ग संख्या 300 के साथ किसी मानक उपविभाजन को जोड़े तो हम पहले उसका शून्य हटा दें और फिर उसे 300 के साथ जोड़े । उदाहरण Dictionary of Social Sciences =300+3=300.3

यह बात याद रखनी चाहिये कि मानक उपविभाजनों को जोड़ने के निर्देशों की भाषा सभी स्थानों पर एक जैसी नहीं है । कुछ स्थानों पर निर्देशों का स्वरूप निम्न प्रकार का हो सकता है ।

(i) 350 Public Administration(लोक प्रशासन)
.001-.996 Standard Subdivisions.....

(ii) 351 Central Governments(केन्द्रीय सरकारें)
.0002-0003Standard Subdivisions
.0007-.0009Standard Subdivisions

(iii) 375 Curriculums (पाठ्य क्रम)

.0001-.0008Standard Subdivisions

उपर्युक्त प्रविष्टियों का अर्थ भी यही हैं कि 350, 351, 375 वर्ग संख्याओं के साथ यदि कोई मानक उपविभाजन जोड़ा जाये तो पहले उसके साथ तीन शून्य (स्वयं का एक शून्य मिलाकर) लगाये जायें और फिर उसे इन वर्ग संख्याओं के साथ जोड़ा जाये ।

उदाहरण:

(1) Dictionary of Public Administration
=350+0003=350.0003

(2) History of Central governments
=351+0009=351.0009

(3) Classification of Curriculums
=375+00012=375.00012

इस प्रकार अनेक स्थानों पर वर्गकार को निर्देश दिये गये हैं कि वह मानक उप-विभाजन के पूर्व एक या दो या तीन शून्य लगाये । कुछ स्थानों पर मानक उपविभाजन का शून्य हटा कर उसका प्रयोग करने निर्देश दिये गये हैं । इन निर्देशों का उल्लंघन नहीं करना चाहिये । यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि जहां कहीं भी निर्देशानुसार अतिरिक्त शून्य एक से अधिक) का उपयोग करने का उल्लेख किया गया है वह इस कारण से किया गया कि उन स्थानों पर एक या दो शून्यों का उपयोग अनुसूची में पहले से ही किसी अन्य प्रयोजन के लिये कर लिया गया है ।

(ख) जहाँ निर्देश न हों: - खण्ड 2 की अनुसूचियों में अनेक वर्ग संख्यायें ऐसी हैं जहां मानक उपविभाजनों के प्रयोग के बारे में निर्देश नहीं दिये गये हैं । जब कभी हम ऐसी वर्ग संख्याओं के साथ मानक उप-विभाजन जोड़ें तो हमें निम्नलिखित सामान्य पथ प्रदर्शक तत्वों का अनुसरण करना होगा:-

(i) यदि वर्ग संख्या के अन्त में शून्य=0 न हो, और मानक उप-विभाजन के प्रयोग के बारे उसके अंतर्गत निर्देश या संकेत भी नहीं हो, तो कोई भी मानक उप-विभाजन उसके साथ जोड़ा जा सकता है ।

उदाहरण: -1. Manual of Public Health =614+0202=614.0202

नोट: - 614 (Public Health) वर्ग संख्या के नीचे मानक उप-विभाजन जोड़ने का कोई निर्देश नहीं है । अत: मानक उप-विभाजन 0202 (Manual) इसके साथ सीधा जोड़ दिया गया है।

उदाहरण:-2. Directory of Post Offices= 383.42+025=383.42025

(ii) यदि किसी वर्ग संख्या के अन्त में शून्य =0 हों और उसके नीचे मानक उपविभाजन के उपयोग के बारे में कोई निर्देश या कोई संकेत भी न हो तो वर्ग संख्या का शून्य हटा कर उसके साथ मानक उपविभाजन जोड़ देना चाहियें ।

उदाहरण: -1 Dictionary of Mathematics = 510+03 =510.3

नोट:- यहां 510 (Mathematics) वर्ग संख्या के अन्त में एक शून्य है तथा इसके नीचे मानक उप-विभाजनों के प्रयोग के बारे में कोई निर्देश या संकेत भी नहीं है अत: हमने 510 वर्ग संख्या का शून्य हटाकर इसके साथ-03 मानक उप-विभाजन जोड़ दिया ।

उदाहरण-2 Medical Colleges = 610+0711=610.711

नोट: - यहाँ भी 610 वर्ग संख्या के साथ एक शून्य है और इस वर्ग संख्या के नीचे मानक उप विभाजनों के प्रयोग के बारे में कोई निर्देश या संकेत भी नहीं है, अत: हमने 610 वर्ग संख्या का शून्य हटाकर इसके साथ मानक उप विभाजन- 0711 (Colleges) जोड़ दिया ।

(iii) यदि किसी वर्ग संख्या के साथ दो शून्य हों और अनुसूचियों में उसके नीचे मानक उप विभाजनों के उपयोग के बारे में कोई निर्देश या संकेत भीं नहीं तो, वर्ग संख्या के दोनों शून्य हटाकर शेष बचे हु ये अंक के साथ मानक उप विभाजन जोड़ देना चाहिए । उदाहरणार्थ, 100, 400,500, 600, 700, 800, 900, (सामान्य भूगोल व इतिहास को छोड़कर) वर्ग संख्याओं के नीचे बनाये वर्गांक, जैसे, 101 से 109,401 से 409, 501 से 509, 601 से 609, 701 से 709, 801 से 809, 901 से 909 उपर्युक्त पथ प्रदर्शक निर्देश के अनुसार ही बनाये गये हैं ।

उदाहरण:-1 Outlines of Sciences =500+0202=502.02

नोट: - वर्ग संख्या 500 के साथ दो शून्य हैं तथा इसके नीचे मानक उपविभाजनों के उपयोग के बारे में कोई निर्देश या संकेत भी नहीं हैं । अत: इस वर्ग संख्या के दोनों शून्य हटाकर इसके साथ –0202 (Outlines) मानक उप-विभाजन जोड़ दिया गया है।

उदाहरण:-2 International organisations of literature= 800+0601=806.01

नोट: -यहां पर भी 800 वर्ग संख्या के दोनों शून्य हटाकर केवल अंक 8 के साथ-0601 (International organisations) मानक उप विभाजन जोड़ दिया गया है ।

5. कुछ मानक उप-विभाजनों के संबंध में विशेष जानकारी

- 0202 इसका प्रयोग किसी विषय के Guide (संदर्शिका, गाइड) के लिये भी किया जाता है । जैसे, Guide to tailoring; Rajasthan; A Travel guide
- 05 इसका प्रयोग किसी विषय के journals, Magazines, periodical (पत्रिकाओं) के लिये किया जाता है । जैसे, Journal of Mathematics.
- 06 इसका प्रयोग किसी विषय के Associations (संघ), Institutions (संस्था), Society (समाज), Conferences (सम्मेलन) आदि के लिये भी किया जाता है । जैसे, Political Science Association, Institution of Engineers, Agricultural Society, Medical Conferences.
- 0901 से-0905 इस समय तालिका का प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है जबकि किसी विषय का विवरण किसी विशेष स्थान से संबंधित न हो । जैसे History of Mathematics in 19th Century.

6. मानक उपविभाजनों पर आधारित शीर्षकों व वर्गीकरण

शीर्षक: 1

Theory of Cooperation 334.01

सहकारिता के सिद्धान्त

अनुक्रमणिका व तृतीय संक्षेपक दोनों की ही सहायता से Cooperatives का अंकन 334 मिलता है । अनुसूची में Cooperatives के साथ मानक उपविभाजन जोड़ने सम्बन्धी कोई निर्देश नहीं दिया गया है । मात्र-09 Historical and geographical treatment के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । इसलिए Theory of cooperation का अंकन बनाने के लिये इसके साथ मानक उपविभाजन सारणी से theory का अंकन-01 लाकर जोड़ा जायेगा । Theory के अंकन-01 पर अनुक्रमणिका की सहायता से भी पहुँचा जा सकता है, जहां theory के सामने संकेताक्षरों में S.S.-01 अंकित है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अन्तिम वर्गांक

334+-01=334.01 बनेगा ।

टिप्पणी : जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया गया है कि मानक उपविभाजन से पूर्व दी हुई छोटी आड़ी रेखा (-) को इसे वर्गांक में जोड़ने से पूर्व हटा लिया जाता है । उपर्युक्त वर्गांक में भी इसे हटा लिया गया।

शीर्षक 2

Encyclopedia of Islam 297.03

इस्लाम धर्म का विश्वकोश

तृतीय संक्षेपक में Islam & Religions derived from it का अंकन 297 है । इसी प्रकार अनुक्रमणिका में Islamic religion का अंकन 297 दिया गया है । अनुसूची में अंकन 297 के सामने मात्र मानक उपविभाजन .06 Organizations जोड़ने का ही निर्देश दिया गया है अन्य मानक उपविभाजन जोड़ने सम्बन्धी ही निर्देश का अभाव है अनुक्रमणिका में Encyclopaedia का अंकन -03 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक : -

297+-03=297.03 बनेगा

शीर्षक : 3

Dictionary of Inorganic Chemistry 546.03

अकार्बनिक रसायन का शब्द कोश

तृतीय संक्षेपक व अनुक्रमणिका दोनों में ही Inorganic Chemistry का अंकन 546 दिया गया है । अनुसूची में भी अंकन 546 के सामने मानक उपविभाजन जोड़ने सम्बन्धी निर्देश नहीं दिये गये हे? इसलिये इन्हें सामान्य नियमानुसार जोड़ा जा सकता है । अनुक्रमणिका में Dictionary and Encyclopaedia दोनों के लिये एक ही मानक उपविभाजन -03 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक -

546 + - 03 = 546.03 बनेगा ।

शीर्षक : 4

Journal of Secondary Education 373.05

माध्यमिक शिक्षा की पत्रिका

तृतीय संक्षेपक व अनुक्रमणिका दोनों में ही Secondary Education का अंकन 373 दिया गया है । अनुसूची में अंकन 373 के सामने पद Secondary Education दिया गया है तथा इसके साथ मानक उपविभाजन जोड़ने के सम्बन्ध में कोई निर्देश नहीं दिया गया है । अनुक्रमणिका में पद Journals के लिये Serials देखने का निर्देश दिया गया है । तथा Serials का अंकन मानक उपविभाजन सारणी में -05 मिलता है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक -

373+ - 05=373.05 बनेगा ।

शीर्षक : 5

Standards for Cow's milk 637.10218

गाय के दूध का मानदण्ड

Cow's milk को अनुसूची में अंकन शीर्षक 637.12 - 637.14 के अन्तर्गत रखा गया है, परन्तु इसके नीचे यह भी निर्देश दिया गया है कि व्यापक अर्थवाली रचनाओं को अंकन 637.1 कें अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाये । अतः इसके साथ Standards का अंकन -0218 मानक उपविभाजन सारणी से लाकर जोड़ने पर अंतिम वर्गांक -

637.1 + - 0218 = 637.10218 बनेगा

शीर्षक : 6

Agriculture as a career 630.23

कृषि एक व्यवसाय

Agriculture को अनुसूची में अंकन 630 के अन्तर्गत रखा गया है । इसके साथ occupation जो कि career का पयार्यवाची है का अंकन -023 मानक उपविभाजन सारणी से लाकर जोड़ने पर अंतिम वर्गांक -

63 (0) + - 023 = 630.23 बनेगा ।

अनुसूचियों में 630 वर्ग संख्या के नीचे मानक उपविभाजन जोड़ने का कोई निर्देश नहीं है । अंत: जैसा कि अनुच्छेद 4 में बताया गया है उसके अनुसार वर्गांक 630 के साथ लगे शून्य (0) को मानक उपविभाजन जोड़ने से पूर्व हटा दिया गया है ।

शीर्षक : 7

Bibliography on Medical Science 610.16 or 016.61

आयुर्विज्ञान की ग्रंथ सूची

अनुसूची में Medical Science का अंकन 610 है । मानक उपविभाजन सारणी में Bibliography का अंकन -016 मिलता है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक

61[01] + - 016 = 610.16 बनेगा ।

अनुसूचियों में वर्गांक 610 के नीचे भी मानक उपविभाजन जोड़ने के संबंध में कोई निर्देश नहीं है । अत : सामान्य पथ प्रदर्शक तत्व के आधार पर 610 वर्गांक का शून्य हटाकर मानक उप विभाजन -016 जोड़ा गया है ।

वैकल्पिक प्रावधान :

मानक उपविभाजन सारणी में अंकन -016 के नीचे जो निर्देश दिया गया है उसका आशय यह है कि विषय के वर्गांक के साथ -016 मानक उप - विभाजन जोड़कर किसी विषय के ग्रन्थों की सूची का वर्गांक बनाने का प्रावधान एक वैकल्पिक व्यवस्था है । अत : अनुसूचियों में दिये गये वर्गांक - 016 Subject Bibliographies and Catalogues के अन्तर्गत ही किसी विषय के ग्रन्थों की सूची का वर्गांक बनाना अधिक ठीक है । अनुसूची पृष्ठ 13 - 14 पर विशिष्ट विषय से सम्बन्धित ग्रंथ सूची का वर्गांक बनाने के लिये अंकन 016 के साथ सम्बन्धित विषय का अंकन 100 -900 जोड़ने का निर्देश दिया गया है । इसका अर्थ यह है कि अनसूचियों में 100 से 900 तक दिये गये वर्गों को 016 आधार संख्या के साथ जोड़ा जा सकता हैं । इस प्रकार Medical Science के अंकन को आधार संख्या 016 के साथ जोड़ने पर अंतिम वर्गांक

016 + 61[0] = 016.61 बनेगा ।

उपर्युक्त वर्गांक में दशमलव के बाद के शून्य को महत्वहीन होने के कारण हटा दिया गया है ।

एक से अधिक शून्यों का प्रयोग (Use of more than one zero)

जैसा कि अनुच्छेद 4 में वर्णन किया जा चुका है सामान्यत : प्रत्येक मानक उपविभाजन की अनुसूचि के वर्गांक के साथ जोड़ते समय एक शून्य का प्रयोग किया जाता है, परन्तु कभी - कभी अनुसूची के किसी - किसी वर्गांक के साथ मानक उपविभाजन जोड़ने के लिये विशेष निर्देश दिया रहता है । जैसे 387.001-.009 Standard subdivision of water transportation. इस प्रकार के निर्देशों के अनुसार वर्ग संख्या के साथ मानक उपविभाजन जोड़ने से पूर्व दो, तीन या चार शून्य जोड़ने का प्रावधान है ।

शीर्षक : 8

Dictionary of Algebra

बीजगणित का कोश 512.003

अनुसूची में Algebra का अंकन 512 दिया गया है तथा इसके नीचे “Use 512.001-512.009 for Standard subdivisions के रूप में मानक उपविभाजनों के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । इस प्रकार निर्देशानुसार मानक उपविभाजन के साथ दो शून्यों का प्रयोग करना आवश्यक है । कोश के अंकन -3 के पूर्व एक -शून्य स्थान पर दो शून्यों का प्रयोग होगा । इस प्रकार अंतिम वर्गांक

512+ -003 =512.003 बनेगा ।

शीर्षक : 9

Study and teaching of Public Administration 350.0007

लोक प्रशासन का अध्ययन और शिक्षण

अनुसूची में public administration का अंकन 350 दिया गया है तथा इसके नीचे 350.0001-350.996 standard subdivision मानक उपविभाजन के प्रयोग का निर्देश है । यहां मानक उपविभाजन के साथ तीन शून्यो का प्रयोग अनिवार्य है । मानक उपविभाजन सारणी में study and teaching का अंकन -07 है । इसके साथ निर्देशानुसार शून्य लगाकर 350 के साथ जोड़ दिया। इस प्रकार 350 + -0007= 350.0007 वर्गांक बनाया गया ।

7. मानक उपविभाजनों का अन्य सारणियों (सारणी 2-7) अथवा अनुसूची की सहायता से विस्तार

(Extension of standard subdivisions by synthesis through tables 2-7 or form the schedules)

कई मानक उपविभाजनों का अन्य सारणियों (सारणी 2-7) अथवा अनुसूची की सहायता से विस्तार करने के निर्देश दिये गये हैं ।

शीर्षक : 10

Dictionary of Domestic science terms in English 640.321

गृह विज्ञान का आंग्ल भाषा में पारिभाषिक कोष

अनुसूची में Domestic science का अंकन 640 दिया गया है । मानक उपविभाजन सारणी में कोष का अंकन व -03 दिया गया है तथा इसके नीचे ही सारणी 6 से सम्बन्धित भाषा का अंकन भाकर जोड़ने का निर्देश दिया गया है । इस प्रकार अंतिम वर्गांक -

64[0]+

-03+ -

21=640.321 बनेगा ।

विश्लेषण :

640= Domestic Science(अनुसूची से)

-03= Dictionary (सारणी 1 से)

-21= English (सारणी 6 से)

नोट: यहां पर 640 वर्ग संख्या का शून्य हटा दिया गया है क्योंकि इसके नीचे मानक उपविभाजन जोड़ने का कोई निर्देश नहीं है ।

शीर्षक : 11

Research in plant breeding in India631.53072054

पादप संजनन के क्षेत्र में भारत में शोध

अनुसूची में plant breeding का अंकन 631.53 दिया गया है । मानक उपविभाजन सारणी में अंकन -072 के सामने पद Research दिया गया है तथा इसी के नीचे अंकन 07201-09 Geographical treatment के अन्तर्गत आधार अंक 0720 का भौगोलिक उपविभावन सारणी के अंकन 1-9 के अनुसार विस्तार करने के निर्देश हैं । भौगोलिक उपविभाजन सारणी में India का अंकन -54 दिया गया है । इस प्रकार अंतिम वर्गांक –

631.53+-072+0+-54=631.53072054 बनेगा ।

शीर्षक : 12

Reading interests of lawyers028.9088344

वकीलों में पढ़ने की रुचि

अनसूची में Reading interests and habits का अंकन 028.9 दिया गया है । मानक उपविभाजन सारणी में अंकन 088 के सामने पद Treatment among groups of specific kinds of persons दिया गया है । इसे पुन : सारणी 7 के अंकन -04-99 के अनुसार विस्तारित करने का निर्देश दिया गया है । इस प्रकार अंतिम वगार्क –

028.9+ -088+ -344=28.9088 344 बनेगा ।

विश्लेषण :

028.9=Reading Interests(अनुसूची से लिया गया है)

-088= Treatment among groups of specific of persons

(मानक उपविभाजन सारणी - 1 से)

-344= Lawyers (सारणी -7 से)

शीर्षक : 13

Optical Principles of Indexing 025.3101535

अनुक्रमणिकरण के प्रकाशीय सिद्धान्त

अनुसूची में Indexing का अंकन 025.31 दिया गया है । मानक विभाजन सारणी में Scientific principles का अंकन -015 दिया गया है । इसे पुन : अनुसूची के अंकन 510-590 के अनुसार इसमें से अंक 5 को हटा कर विस्तारित करने का निर्देश दिया गया है । इस प्रकार अंतिम वगार्क

025.31+ -015+[5] 35 =025.3101535 बनेगा ।

विश्लेषण :

025.3= Indexing (अनुसूची से)

-015= Scientific Principles (सारणी 1 से)

-535=Optics (अनुसूची से)

शीर्षक: 14

Family law of Burmese 346.15089958

बर्मीज की पारिवारिक कानून

अुनसूची में अंकन 346.015 के सामने पद Domestic relation(Family law) मिलता है । मानक उपविभाजन सारणी में अंकन -89 के सामने पद Treatment among specific racial, ethnic, national groups मिलता है जिसके अन्तर्गत सारणी 5 के अंकनों -01-99 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 5 में Burmese का अंकन -958 दिया गया है इस प्रकार अंतिम वर्गांक -

346.015+ -089+ -958= 346.015089958 बनेगा ।

विश्लेषण :

346.015= Family law (अनुसूची से)

-089= Treatment among specific racial etc. (सारणी-1 से)

-958= Burmese (सारणी 5 से)

वर्गीकृत शीर्षक

(Worked out titles)

उपयुक्त ढंग से समझाई गई विधि द्वारा निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाइये तथा सामने दिये वर्गांकों से मिलाइये :

1. Encyclopedia of Library science
   02[0] + -03 =020.3
2. Dictionary of physical chemistry
   541.3+ -03 =541.303
3. Research on Buddhism
   294.3+ -072 =294.3072
4. Study and teaching of political science
   320+ -07 =320.07
5. Teaching of geometry
   516+ -007 =516.007
6. Methodology of Lingusties
   41 [0] + 018 =410.18
7. Outlines of plant breeding
   631.53+ -0202 =631.530202
8. Subject Index of bacteriology
   589.9+ -0016 =589.90016
   016+5899 =016.5899
9. Unemployment in 20th century
   331.13790+-[090]4 =331.137904
10. Journal of Criminal law
    345+005 =345.005
11. Audio visual treatment of colon classification
    025.435+ -0208 =025.4350208
12. Insurance tables
    368+00212 =368.00212
13. Medical Associations
    61 [0] + 06 =610.6
14. Higher education 19th century
    378+009034 =378.009034
15. Trade catalogue of soaps
    688.12+ -0294 =668.120294
16. Local Self Government quarterly

352+ -0005 =352.0005

17. History of textile technology in 19th century

677+ -009034 =677.009034

18. Handicrafts among the Burmese

745.5+ -089+ -958 =745.5089958

19. Family law of ancient Greeks

346.015+ -089+ -81 =346.01508981

20. Woman in British history

941+ -0088+ -042 =941.0088042

अभ्यास के लिये शीर्षक (Assignment)

निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाइये :

1. Study and teaching of economics
2. Military science scholarships
3. Directory of Indian foreign trade
4. Dictionary of Social law
5. Engineering colleges of japan
6. Fellowships in social science
7. History of surgery.
8. Management of farm production.
9. Science and art of indexing.
10. Methodology of Public administration.
11. Dictionary of Cats
12. Journal of oriental philosophy.
13. Guide to stamp collecting.
14. Manual of subject cataloguing.
15. Researches on food and drug allergies in India.
16. Wages in 17th Century
17. Planning of library building in 13th Century.
18. Biographical dictionaries.
19. Dictionary of poultry farming
20. Agricultural statistics.

8. भौगोलिक उपविभाजन (Areas)

इ्यूई दशमलव वर्गीकरण खण्ड 1 पृष्ठ 14 से 386 तक भौगोलिक उपविभाजनों की एक विस्तृत सारणी दी गई है। इस सारणी का उपयोग भौगोलिक क्षेत्रों की वर्ग संख्याओं का पता लगाने के लिये किया

जाता है, जैसे महाद्वीप (Continents), देश (Country), प्रान्त (State), शहर (City), गांव (Village), समुद्री सीमायें आदि। लगभग सभी विषयों व वस्तुओं का अध्ययन या वर्णन विभिन्न प्रकार के भौगोलिक क्षेत्रों के संदर्भ में किया जा सकता है। जैसे भारत की विदेश नीति, जापान का विदेशी व्यापार, राजस्थान की विधान सभा, चीन में उच्च शिक्षा,आदि।

भौगोलिक विभाजन सारणी ड्यई दशमलव वर्गीकरण खण्ड 1 में दी गई सातों सहायक सारणियाँ में सबसे बड़ी सारणी है। इण्डो-अरेबिक अंकों (Indo-Arabic numerals) के सीमित आधार के कारण सम्पूर्ण सारणी को 9 भागो में विभक्त किया गया है। अंकन -1 से -19 का उपयोग निम्नलिखित प्रकार के विभिन्न सामान्य क्षेत्रों (General areas) के लिये किया गया है:

1. कटिबन्धीय प्रदेश (Zonal regions) जैसे उष्ण कटिबन्ध, शीत कटिबन्ध आदि।
2. भूमि और भूमि के आकार पर आधारित (Land and land forms) जैसे द्वीप,पहाड पठार, समतल क्षेत्र आदि।
3. वनस्पति के आधार पर (Types of vegetation) जैसे जंगल, घास, वाली भूमि, रेगिस्तान आदि।
4. वायु व जल की (Air and water) सीमाओं पर आधारित प्रदेश, जैसे वायुमण्डल, अटलांटिक महासागर, प्रशान्त महासागर, हिन्द महासागर आदि।
5. सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक व प्राकृतिक तत्वों पर आधारित प्रदेश, जैसे ब्रिटिश साम्राज्य रोमन साम्राज्य, विकसित देश विकासशीलदेश, कम्यूनिस्ट देश, शहरी क्षेत्र, अर्द्ध शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र, हिन्दु बाहुल्य क्षेत्र आदि। इस प्रकार के कुछ भौगोलिक क्षेत्रों की वर्ग संख्यायें निम्नानुसार हैं:

-11	Frigid zones	(शीत कटिबन्ध)
-12	Temperature zones	(शीतोष्ण कटिबंध)
-13	Torrid zone	(उष्ण कटिबंध)
-143	Mountains etc.	(पहाड़ आदि)
-162	Oceans and seas	(महासागर व समुद्र)
-17	Socio-economic regions	(सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र)
-1717	Communist bloc	(साम्यवादी गुट)
-1734	Rural regions	(ग्रामीण क्षेत्र)
-1811	Eastern regions	(पूर्वी क्षेत्र)
-1812	Western regions	(पश्चिमी क्षेत्र)

अंकन -3 से -9 का प्रयोग महाद्वीपों और देशों के लिए किया गया है । भौगोलिक अंकन -3 प्राचीन विश्व को आवंटित किया गया है तथा उसको निम्नलिखित भागों में बांटा गया है ।

-3	The ancient world
-31	Chins
-32	Egypt
-33	Palestine

-34 India

-35 Mesopotamia and Iranian Plateau

-36 Europe North & West of Italian Peninsula

-37 Italian Peninsula & adjacent territories

-38 Greece

-39 Other parts of ancient world

भौगोलिक अंकन -4 से -9 तक का प्रयोग आधुनिक विश्व के भौगोलिक क्षेत्रों को दर्शानें के लिए किया गया है । आधुनिक विश्व के क्षेत्रों को निम्नलिखित महाद्वीपों में बांटा गया है :

-4 Europe

-5 Asia

-6 Africa

-7 North America

-8 South America

-9 Other parts of the world.

प्रत्येक महाद्वीप को नौ प्रमुख देशों में बांटा गया है। उदाहरणार्थ अंकन -5 Asia को निम्नलिखित देशों में बाँटा गया है :

-51 China and adjacent areas

-52 Japan and adjacent islands

-53 Arabian Peninsula and adjacent areas

-54 South Asia, India

-55 Iran (Persia)

-56 Middle East (Near East)

-57 Siberia (Asiatic Russia)

-58 Central Asia

-59 South East Asia

इसी प्रकार अन्य महाद्वीपों को भी उनके देशों के अनुसार बांटा गया है। यहां एक बात विशेष ध्यान देने की है कि India का अंकन दो स्थानों पर मिलता है -34 एवं -54 के अंतर्गत । पहली वर्ग संख्या -34 का प्राचीन भारत के लिए तथा दूसरी वर्ग संख्या -54 का आधुनिक भारत के लिए प्रयोग किया जायेगा। इसी प्रकार अन्य देशों को वर्ग संख्याओं का प्रयोग किया जायेगा ।

9. भौगोलिक इकाई व अंकन ढूँढने की विधि

(Procedure to find out Notation of Geographical area)

भौगोलिक सारणी की विस्तृतता के कारण इसमें किसी भी भौगोलिक इकाई का अंकन ढूँढने में काफी खोज करनी पड़ती है । प्रत्येक देश की प्रीवीष्ट सापेक्षक अनुक्रमणिका खण्ड 3 में मिलती है । उदाहरणार्थ Germany देश का अंकन ढूंढने के लिए अनुक्रमीणका में अक्षर “G” के नीचे खोजने पर Germany

के अन्तर्गत Country पद मिलता है जिसके सामने area-43 लिखा मिलता है जो यह सूचित करता है कि Area Table में जर्मनी का अंकन -43 है ।

Germany

Country area-43

इसी प्रकार India का अंकन प्राप्त करने के लिए अनुक्रमीणका में अक्षर "I" के नीचे खोजने पर India पद के सामने area-54 अंकित है तथा इसके नीचे Ancient के सामने area-34 अंकित मिलता है । इसका तात्पर्य यह हुआ है कि आधुनिक भारत का अंकन भौगोलिक सारणी में -54 तथा प्राचीन भारत का अंकन भौगोलिक सारणी में -34 है ।

10. भौगोलिक उपविभाजनों के प्रयोग के नियम

भौगोलिक उपविभाजनों का उपयोग कभी भी अकेले नहीं किया जाता अनुसूचियों में दिये गये किसी भी अंकन के साथ भौगोलिक उपविभाजनों को जोड़ा जा सकता है । इनका प्रयोग निम्न प्रकार से किया जा सकता है

(i) निर्देशों के अनुसार –अनुसूचियों में अनेक वर्ग संख्याओं के नीचे भौगोलिक उपविभाजन जोड़ने का निर्देश "Add area Notation" के रूप में दिया गया है । इस निर्देश के अनुसार संबंधित आधार संख्या के साथ भौगोलिक क्षेत्र जोड़ा जा सकता है ।

(ii) जहां निर्देश नहीं हो – यदि किसी वर्ग संख्या के साथ उपर्युक्त प्रकार का निर्देश न दिया गया हो तो मानक उपविभाजन -09 की सहायता से भौगोलिक उपविभाजन का प्रयोग किया जा सकता है । किन्तु -09 मानक उपविभाजन का प्रयोग करते समय उन सभी नियमों व निर्देशों का पालन करना चाहिए जो कि पिछले पृष्ठों में मानक उपविभाजन के प्रयोग के लिये बनाये गये हैं ।

निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा इन दोनों अवस्थाओं को स्पष्ट किया जा रहा है -

शीर्षक : 1

Higher education in Germany378.43

जर्मनी में उच्च शिक्षा

अनुसूची में अंकन 378 के सामने पद Higher education दिया गया है । तथा अंकन 378.009 के सामने Historical and geographical treatment के नीचे Class treatment by specific continents, countries, localities in modern world in 378.4-378.9 (not 378.0094-378.009) के बारे में निर्देश दिया गया है । 378.4 -.9 Higher education and institutions by specific continents, countries, localities in modern world के नीचे भौगोलिक उपविभाजन सारणी से भौगोलिक क्षेत्र के अंकन 4-9 आधार संख्या 378 के साथ जोड़ने का निर्देश मिलता है । भौगोलिक उपविभाजन सारणी में जर्मनी का अंकन 43 दिया गया है । इस प्रकार

Higher education in Germany=37802-43=378.43

शीर्षक : 2

General libraries of U.S.A. 027.073

संयुक्त राज्य अमरीका के सामान्य ग्रंथालय

अनुसूची में General libraries वर्ग अंकन 027 दिया गया है तथा इसके नीचे .001-.008 तक मानक उपविभाजन जोड़ने का प्रावधान है । परंतु किसी देश के सामान्य ग्रथालयों का 027.01 -027.09 के अन्तर्गत वर्गीकरण करने का न निर्देश दिया गया है तथा आधार संख्या 027.0 के साथ भौगोलिक उपविभाजन जोड़ने का भी निर्देश दिया गया है । भौगोलिक उपविभाजन सारथी में U.S.A का अंकन -73 दिया गया है । इस प्रकार

General libraries in U.S.A. =027.0+-73=027.073

शीर्षक : 3

Hunting in ancient India 799.2934

प्राचीन भारत में शिकार

अनुसूची में अंकन 799.2 के सामने Hunting मिलता है तथा इसके नीचे .29 Historical and geographical treatment दिया गया है । भौगोलिक उपविभाजन जोड़ने सम्बन्धी निर्देश अंकन 799.291-.299 Geographical treatment के अन्तर्गत दिया गया है । भौगोलिक उपविभाजन सारणी में Ancient India का अंकन -34 मिलता है । निर्देशानुसार आधार अंक 799.29 के साथ प्राचीन भारत का अंकन जोड़ने पर

Hunting in ancient India=799.29+-34=799.2934 बनेगा ।

शीर्षक : 4

Birds of Sahara desert= 598.2966

सहारा रेगिस्तान के पक्षी

अनुसूची में अंकन 598.29 के सामने Birds के लिये Geographical treatment का प्रावधान मिलता है तथा अंकन 59.29-.299 के अन्तर्गत आधार संख्या 598.29 के साथ भौगोलिक उपविभाजन 3-9 का जोड़ने का निर्देश दिया गया है । भौगोलिक सारणी में Sahara Desert का अंकन -66 मिलता है । निर्देशानुसार दोनों को जोड़ने पर

Birds of Sahara desert = 598.29+-66=598.2966

शीर्षक : 5

Cancer disease in China =616.99400951

चीन में केन्सर रोग

अनुसूची में अंकन 616.994 के सामने पद Malignant neoplasms (Cancers) दिया गया है तथा इसके साथ कटार का चिन्ह लगा हुआ है । अर्थात् इसमें 616.1 - 616.8 के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार दो शून्यों के द्वारा मानक उपविभाजन जोड़े जा सकते हैं । चूंकि Cancer के अन्तर्गत भौगोलिक उपविभाजन जोड़ने सम्बन्धी निर्देश नहीं दिये गये हैं, इसलिये इसके साथ भौगोलिक उपविभाजन -09 मानक उपविभाजन की सहायता से ही जोड़ा जा सकता है । भौगोलिक उपविभाजन सारणी में China के दो अंकन -31 व -51 प्राप्त होते हैं । इनमें से अंकन -31 का प्रयोग प्राचीन चीन व अंकन -51 का प्रयोग आधुनिक चीन हेतु किया गया है इस प्रकार

Cancer disease in China =616.994+ -009+ -51=616. 99400951

शीर्षक : 6

History of Analytical Chemistry in Europe =547.30094

अनुसूची में Analytical Chemistry की वर्ग संख्या 547.3 है । इसके साथ मानक उपविभाजन -09 जोड़कर यूरोप का भौगोलिक क्षेत्र जोड़ना है । क्योंकि यहां पर भौगोलिक क्षेत्र को जोड़ने के निर्देश नहीं दिये गये हैं । किन्तु 547.3 के साथ मानक उपविभाजन जोड़ने के निर्देश अवश्य मिलते है, जैसे "Use 547.3001-547.3009 for Standard subdivision." इस निर्देश के अनुसार 547.3 के साथ मानक उपविभाजन -09 को दो शून्य लगाकर जोड़ा जा सकता है । तथा उसके बाद यूरोप की वर्ग संख्या -4 जोड़ी जा सकती है । इस प्रकार –

History of Analytical Chemistry in Europe=

547.3+-009+-4=547.30094

दो देशों के मध्य संबंध (Relation between two counties)

दो देशों के मध्य वैदेशिक, आर्थिक ,व्यापारिक आदि अनेक प्रकार के संबंध हो सकते हैं । इस प्रकार के संबंधों की वर्ग संख्यायें बनाने के लिये अनुसूचियों में यथास्थान निर्देश दिये गये हैं । निर्देशानुसार दो देशों के प्रतीक चिन्हों को योजक अंक 0 अथवा 09 द्वारा जोड़ने का प्रावधान किया गया हैं । यदि इस प्रकार के निर्देश नहीं दिये गये हों, तो किसी भी परिस्थिति में दो देशों के प्रतीक चिन्हों का प्रयोग एक साथ नहीं करना चाहिए ।

जहां दो देशों को जोड़ने संबंधी निर्देश दिये गये है वहां पहले किस देश की प्रतीक संख्या को प्राथमिकता दी जानी चाहिए इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रावधान किये गये है :

(i) जिस देश को ग्रंथ में अधिक महत्व दिया गया हो, उस देश के अंकन को प्राथमिकता दी जानी चाहिये ।

(ii) यदि ग्रंथ में दोनों देशों को समान महत्व दिया गया हो तो भौगोलिक सारणी में जिस देश का अंकन गणनात्मक दृष्टि से पहले आता हो उसे प्राथमिकता दी जानी चाहिये ।

(iii) यदि चाहें तो मातृ देश को महत्व देने के लिए, गणनात्मक आधार को ध्यान में न रखते हुए मातृ देश के अंकन को प्राथमिकता दी जा सकती है ।

नोट : किन्तु कुछ वर्ग संख्याओं के नीचे इस बारे में स्पष्ट निर्देश मिलते हैं । अत: उस निर्देश के अनुसार ही किसी देश को प्रथम स्थान देना चाहिये ।

शीर्षक : 6

Foreign relations between India and China 327.54051

भारत एवं चीन में म मध्य वैदेशिक संबंध

अनुसूची में अंकन 327 के सामने पद Inter-national relation दिया गया है इसके नीचे "3-.9 Foreign policies of and foreign relations between specific nations" के अन्तर्गत आधार संख्या 327 के साथ भौगोलिक सारणी से अंकन -3-9 को लाकर जोड़ने का निर्देश दिया गया है । भौगोलिक सारणी में भारत का अंकन -54 एवं चीन का अंकन -51 मिलता है । भारत के अंकन को मातृदेश देश का अंकन होने के कारण प्राथमिकता देते हु ये पहले जोड़ा जायेगा तत्पश्चात् इस फ्रकार बनाये गये वर्गांक के साथ शून्य जोड़ने के बाद चीन के अंकन को जोड़ा जायेगा । इस प्रकार

Foreign relations between India and China =327 + -54 + 0 + -51=327.54051

शीर्षक : 7

French trade with Mexico=382.0944072

फ्रांस का मेक्सिकों के साथ व्यापार

अनुसूची में अंकन -382 के सामने पद International Commerce (Foreign trade) मिलती है । तथा इसके नीचे .09 अंकन के सामने पद Historical and geographical treatment के अन्तर्गत भौगोलिक उपविभाजन 1-9 का प्रयोग आधार संख्या 382.09 के साथ करने का निर्देश दिया गया है । भौगोलिक उपविभाजन सारणी में फ्रांस का अंकन -44 तथा मेक्सिको का अंकन -72 दिया गया है । निर्देशानुसार दोनों को जोड़ने पर

French trade with Mexico= 382.09 + -44 + 0 + -72 =382.0944072

शीर्षक : 8

Russian Investment in Afganistan 332. 673470581

अफगानिस्तान में रूसी पूंजी निवेश

अनुसूची में 332.6733-.67391 Investments origination in specific continents and countries शीर्षक दिया गया है तथा इसमें आधार अंक 332.673 के साथ भौगोलिक सारणी से अंकन -3-9 लाकर जोड़ने का निर्देश दिया गया है । निर्देश के अनुसार पूंजी निवेश करने वाले राष्ट्र का अंकन पहले जोड़ा जायेगा, तत्पश्चात् योजक, अंक शून्य का प्रयोग करते हुए उस देश का अंकन जोड़ा जायेगा जहां पर पूंजी निवेश किया है । भौगोलिक सारणी में रूस का अंकन -47 एंव अफगानिस्तान का अंकन -581 मिलता है । निर्देशानुसार

Russian investment in Afganistan =332.673 + -47+ -0 + -581 =332.673470581

शीर्षक : 9

Colonization by the Dutch in the Far East

डचों द्वारा सुदूर – पूर्व में उपनिवेशन

अनुसूची में अंकन 325.3 के सामने पद Colonization दिया गया है तथा इसके नीचे .33 -.39 Colonization by specific countries के अन्तर्गत आधार संख्या 325.3 में जिस राष्ट्र द्वारा उपनिवेशन किया गया है, उसका अंकन भौगोलिक सारणी से लेकर पहले जोड़ने का प्रावधान है, तत्पश्चात् इसके परिणामस्वरूप बने वर्गांक के साथ योजक अंक 09 जोड़कर दूसरे देश का अंकन जोड़ा जायेगा । भौगोलिक सारणी में डच का अंकन -492 एवं सदूरपूर्व का अंकन - -5 दिया गया । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर

Colonization by the Dutch in the Far East=325.3+ -492 + 09+ -5=325.3492095

शीर्षक : 10. भौगोलिक सारणी के -11 से -19 तक के अंकनों व -3 से -9 तक के अंकनों व संयोजन

यह संयोजन दो प्रकार से किया जाता है

(1) भौगोलिक सारणी -2 के -11 से -19 तक के सामान्य भौगोलिक क्षेत्रों को व्यक्त करने वाले किसी भी अंकन के साथ शून्य लगा कर उसके साथ -3 से -9 तक के अनुक्रमकाकोई भी अंकन जोड़ा जा सकता है; Forest regions in India= -152 (Forest regions + 0 +

-54(India) = -152054. Rural regions of Rajasthan=-1734(Rural Regions) + 0 + -544 (Rajasthan) =-17340544

(2) यदि -3 से -9 तक के अनुक्रम के अंकनों के साथ -11 से -19 तक के अंकन जोड़ना हो तो पहले -3 से -9 तक के किसी भी अंकन के साथ 009 अंकन जोड़ना चाहिये तथा उसके बाद -11 से -19 तक के अनुक्रम के अंकन का -1 हटाकर शेष अंकन को जोड़ देना चाहिये; जैसे, Forest Regions in India= -54 (India) + 0C9 +[-1]52=-5400952 Rural Regions of Indian =-54 (India)+ 009+ [-1] 734 = -54009734

11. सारांश:

ग्रंथों का वर्गीकरण मुख्य रूप से उनकी विषयवस्तु के आधार पर किया जाता है । किन्तु कुछ ग्रंथ विषयवस्तु के सैद्धान्तिक पहलू पर आधारित होतें हैं, जबकि कुछ ग्रंथ केवल विषय की रूप रेखा का निरूपण करते हैं । कुछ ग्रंथ विषय के शब्दकोष, अब्दकोष या संकलन के रूप में में प्रकाशित होते हैं । दशमलव वर्गीकरण में विषय के विवरण के इन स्वरूपों को व्यक्त करने के लिए मानक उपविभाजन सारणी -1 का प्रयोग किया जाता है । मानक उपविभाजन तीन वर्गों में विभाजित किये जा सकते है, (1) बाह्य स्वरूप एवं दृष्टिकोण से संबंधित जैसे, सारांश, रूपरेखा; (2) आन्तरिक संरचना से संबंधित, जैसे सिद्धान्त. इतिहास तथा (3) अन्य । इन सभी मानक उपविभाजनों का प्रयोग अनुसूचियों में दिये गये वर्गांकों के साथ ही हो सकता है । एक तो इनका प्रयोग अनुसूचियों में विभिन्न वर्ग संख्याओं के अन्तर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार किया जा सकेता है । जैसे, “Use 300.1-300.9 for Standard subdivisions.” किन्तु जिन वर्ग संख्याओं के अन्तर्गत निर्देश नहीं दिये गये हैं वहां पर कुछ सामान्य पथ प्रदर्शक तत्वों के आधारपर किया जा सकता है – जैसे यदि किसी वर्ग संख्या के अन्त में एक शून्य हो एवं उसके साथ मानक उपविभाजन जोड़ने का निर्देश न हो तो, उसका शून्य हटा कर उसके साथ मानक उपविभाजन जोड़ा जा सकता है । यदि किसी वर्ग संख्या के साथ दो शून्य हों व मानक उपविभाजन के निर्देश न हों तो उसके दोनों शून्य हटा कर उसके साथ मानक उपविभाजन जोड़ दिया जाता है । जैसे Journal of Agriculture = 630+05=630.5 Journal of Science=500+05

जब तक स्पष्ट निर्देश न हों किसी एक मानक उपविभाजन के साथ दूसरा मानक उपविभाजन नहीं जोड़ना चाहिये । यदि किसी मानक उपविभाजन का अर्थ किसी विषय वर्ग संख्या से ही स्पष्ट हो जाता हो तो उसके साथ संबंधित मानक उपविभाजन का प्रयोग करना अनावश्यक व व्यर्थ है । - जैसे, 330.16= Theory of Property. यहां पर मानक उपविभाजन -01 = Theory का प्रयोग करना अनावश्यक है ।

प्राय: सभी विषयों का विवरण किसी भौगोलिक क्षेत्र के संदर्भ में किया जा सकता है । जैसे, भारत में उच्च शिक्षा । अतः : विभिन्न प्रकार के भौगोलिक क्षेत्रों का उल्लेख भौगोलिक सारणी -2 में किया गया है । भौगोलिक सारणी में दिये गये क्षेत्रों को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जाता है । (1) सामान्य भौगोलिक क्षेत्र - अर्थात् वे भौगोलिक क्षेत्र जो भूमि या भूमि के आकार पर आधारित हैं, जैसे पठार, पहाड़ी प्रदेश; वे क्षेत्र जो आर्थिक व सामाजिक विशेषताओं पर आधारित हैं, जैसे ग्रामीण

क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, विकसित देश, विकासशील देश; दिशाओं के दृष्टिकोण पर आधारित क्षेत्र, जैसे पूर्वी देश, पश्चिमी देश; वनस्पति की विशेषता पर आधारित जैसे वन्य क्षेत्र, घास वाले क्षेत्र । (2) प्राचीन दुनिया – जैसे प्राचीन भारत, प्राचीन ग्रीस । (3) आधुनिक विश्व – जैसे, भारत, जापान, रूस । सामान्य श्रेणी के क्षेत्रों को -1 से -19 तक के प्रतीक चिन्हों द्वारा सूचित किया है । प्राचीन दुनिया की श्रेणी वाले क्षेत्रों को -3 से -39 तक के प्रतीक चिन्हों द्वारा सुचित किया गया है । आधुनिक विश्व की श्रेणी वाले क्षेत्रों को -4 से -9 तक के प्रतीक चिन्हों द्वारा सूचित किया गया है ।

भौगोलिक सारणी का प्रयोग अनुसूचियों में दिये गये निर्देशों के अनुसार हो सकता है; -_ जैसे 374.91-.99 अंकन शीर्षक के नीचे जो निर्देश दिया गया है वह इस प्रकार है – "Add Areas notation 1-9 from Table 2 top the base number 374.9" जहां पर इस प्रकार के निर्देश हो वहां तो आधार संख्या (Base number) के साथ भौगोलिक क्षेत्र का अंकन जोड़ा जाता है । किन्तु जिस वर्ग संख्या के नीचे इस प्रकार के निर्देश न हों वहां उस वर्ग संख्या के साथ पहले मानक उपविभाजन -09=Historical and Geographical Treatment जोड़ा जाता है तथा उसके बाद संबंधित भौगोलिक क्षेत्र का अंकन जोड़ दिया जाता है । जैसे, Rail Road Transportation in India =385.0954

भौगोलिक सारणी के -1 से -19 तक के अंकनों को -3 से -व तक के अंकनों के साथ नियमानुसार जोड़ा जा सकता है ।

12. भौगोलिक विभाजनों पर आधारित वर्गीकृत शीर्षक:

उपर्युक्त ढंग से समझाई गयी विधि द्वारा निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाइये तथा सामने दिये वर्गाकों से मिलाइये :

1. Political parties in India
   324.2 + -54 =324.254
2. Japanese legislature
   328 + -52 =328.52
3. Political conditions in Rajasthan
   320.9 + -544 =320.9544
4. Standard of living in rural areas
   339.47 + -09 + -1734 =339.47091734
5. Democracy in India and Great Britain
   (i) 321.8 + -09 + -54 =321.80954
   (ii) 321.8 + -09 + -41 =321.80941
6. Birds of Bhutan
   598.29 + -5498 =598.295498
7. Foreign trade of Australia
   382.09+-94 =382.0994

8. Economic assistance by communist counties
338.91+-1717 =338.911717
9. Tax revenues in Bihar
362.2 + -009 + -5412 =336.20095412
10. Human diseases in West Bengal
616+ -009 + -5414 =616.0095414
11. Emigration from India to Canada
325.2 + -54 + -09 + -71 =325.2540971
12. Exchange rate of currencies between India and Iraq
33.45609 + -54 + 0 + -567 =332.45609540567
13. Colonization by Great Britain in India
325.3 + -41 + 09 + -54 =325.3410954
14. Treaties between India and Pakistan
341.266-54 + 0 + -5491 =341.02665405491
15. Trade agreement between Brazil and Columbia
382.9 + -81 + 0 -861 =382.9810861
16. Fauna of Antarctica
591.9 + [574.9] + -989 =591.9989
17. Botanical gardens of tropical countries
580.744 + -13 =580.74413
18. Unemployment in Bangladesh
331.1379 + -5492 =331.13795492
19. Wages in China
331.29 -51 =331.2951
20. Geography of Mexico
91+ [7] + -72 =971.2

13. अभ्यास के लिये शीर्षक (Assignment)

निम्नलिखित विषयों के वर्गांक बनाइये :

1. Political situation in Afganistan
2. Foreign policy Russia
3. Electrons in Sweden
4. Trade unions of France
5. History of Adult education in Kashmir

6. Monetary policy of U.S.A.
7. Birds of desert areas
8. Public finance of Great Britain
9. International trade of Western block
10. Railroad transportation in Japan
11. Economic policy of Germany towards France
12. Foreign treaties between India and China
13. Indo-Bangladesh relations
14. Emigration from Burma to Saudia Arabia
15. Immigration of India labourers to Dubai
16. Japanese Investment in India
17. United Nations and Cuba
18. America aid to Pakistan
19. Dances in Ancient India
20. Social structure of China
21. Adult Education in Rural Rajasthan

14. ग्रंथ सूची

इकाई 4 के नीचे।

कोर्स –2Bपुस्तकालय वर्गीकरण - प्रायोगिक : दशमलव वर्गीकरण

इकाई – 3दशमलव वर्गीकरण : प्रायोगिक – III

सारणी – 3 एवं 3A : विशिष्ट साहित्य संबंधी उपविभाजनों का प्रयोग

उद्देश्य (Objectives)

1. सारणी 3 एवं 3A: विशिष्ट साहित्य परक उपविभाजनों के प्रयोग की जानकारी देना ।
2. शेक्सपीयर की कृतियों की तालिका के प्रयोग का ज्ञान कराना

संरचना विषयवस्तु (Structure)

1. विशिष्ट साहित्यपरक उपविभाजन
2. विशिष्ट साहित्य परक उपविभाजन के उपयोग के नियम
3. विशिष्ट साहित्यपरक उपविभाजनों पर आधारित ग्रंथों का वर्गीकरण
4. शेक्सपीयर संबंधी तालिका का प्रयोग
5. सारांश
6. वर्गीकृत शीर्षक
7. अभ्यास के लिए शीर्षक
8. ग्रन्थ सूची

1. सारणी 3 एवं सारणी 3A: विशिष्ट साहित्यपरक उपविभाजन

इयई दशमलव के खण्ड 1 पृष्ठ 387 -403 पर दी गई है । सारणी 3 में विभिन्न भाषाओं के साहित्यपरक उपविभाजन-काव्य, नाटक, कथासाहित्य, निबन्ध, संग्रह आदि दिये गये हैं । सारणी 3 में उल्लिखित उपविभाजनों का प्रयोग कभी भी अकेले नहीं किया जा सकता । इनका उपयोग विशेष रूप से खण्ड 2 की अनुसूचियों में उल्लिखित 810 से 890 तक की वर्ग संख्याओं के साथ किया जा सकता है । तथा 810 से 890 तक के क्रम में भी केवल उन्हीं के साथ किया जा सकता है जिनके साथ तारक (*) चिन्ह लगा हुआ है । 810 से 890 के क्रम में भी कुछ तारांकित वर्ग संख्याओं के अन्तर्गत तो आधार संख्यायें निर्दिष्ट कर दी गई हैं जबकि कुछ तारांकित (*) वर्ग संख्याओं के अन्तर्गत आधार संख्यायें नहीं दी गई । जहां आधार संख्यायें (Base Number) निर्धारित कर दी गई हैं वहां तो सारणी 3 से कोई भी उपविभाजन लेकर उक्त आधार संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है । किन्तु जहां आधार संख्या नहीं दी गई है वहां तारांकित वर्ग संख्या को ही आधार संख्या मान लिया जाता है और उसके साथ सारणी 3 का कोई भी उपविभाजन जोड़ा जा सकता है । उदाहरण के तौर पर 820 तारांकित वर्ग संख्या के नीचे अंग्रेजी साहित्य की आधार संख्या 82 दी गई है । अत: सारणी 3 से कोई भी विभाजन लेकर 82 के साथ ही जोड़ा जा सकता है, जैसे English Poetry=82+1=821. इसके विपरीत उर्दु साहित्य के वर्गांक 891.439 के साथ तारक चिन्ह तो लगा हुआ है किन्तु इसके नीचे आधार संख्या

नहीं दी गई । अत: 819.439 को ही आधार संख्या मानकर इसके साथ सारणी-3 का कोई भी उपविभाजन जोड़ा जा सकता है । सारणी 3A सारणी 3 की अनुपूरक है । अत: सारणी 3A में उल्लिखित प्रतीक चिन्हों का प्रयोग सारणी 3 के उपविभाजनों के साथ निर्देशों के अनुसार किया जा सकता है ।

2. सारणी 3: उपयोग के नियम

सारणी 3 का निर्माण प्रथम बार इ्यूई दशमलव के 18वें संस्करण में किया गया था । इसके निर्माण के फलस्वरूप मुख्य वर्ग साहित्य से सम्बन्धित ग्रंथों को वर्गीकृत करने में काफी सुविधा लेने लगी है । 19वें संस्करण में इस सारणी को पूर्ण रूप से संशोधित एवं परिवर्द्धित करके दो मागों में विभाजित कर दिया गया है सारणी 3 व सारणी 3A; सारणी 3A के प्रयोग सम्बन्धी निर्देश सारणी 3 में यथा स्थान दिये गये हैं । साधारणतया सारणी 3A के एकलों का प्रयोग सारणी 3 के एकलों के साथ निर्देशानुसार किया जाता है, किन्तु खण्ड 2 की अनुसूचियों में 808.8 व 809 के कुछ उपविभाजनों के साथ भी सारणी 3A के एकलों का सीधा प्रयोग करने के निर्देश मिलते हैं । जैसे 808.801 -.803 शीर्षक के अन्तर्गत इस प्रकार का निर्देश मिलता है " Add notations 1-3 form Table 3-A to base number 808.80". इसी प्रकार 808.1, 808.2 808.3 आदि के साथ सारणी -3 के उपविभाजनों के प्रयोग के बारे में निर्देश दिये गये हैं ।

यहां सारणी 3 का विस्तृत विवेचन निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर किया जा रहा है । –

1. यदि शीर्षक में भाषा अनुपस्थित हो

यदि किसी ग्रंथ की विषय वस्तु में केवल सामान्य साहित्य तथा उससे संबंधी पक्षों का उल्लेख हो और उसके विषय में किसी साहित्य की भाषा का उल्लेख न हो अथवा वह साहित्य एक से अधिक भाषाओं से सम्बन्धित हो तो उसे वर्ग संख्या 801 व 809 के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जायेगा । ध्यान पूर्वक अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि यह संशोधित मानक उपविभाजन ही हैं, जिनका कि प्रयोग मात्र मुख्य वर्ग 800 हेतु किया गया है ।

विशिष्ट साहित्य. परक उपविभाजन पर आधारित ग्रंथों वर्गीकरण

शीर्षक 1

Young Authors Association 806

युवा लेखक संघ

यदि शीर्षक में मानक उपविभाजन -01 से -07 से सम्बन्धित पद दिया गया हो तो, उसे वर्ग संख्या 801 से 807 में किया जायेगा । उपर्युक्त शीर्षक में संघ एक मानक उपविभाजन है । इसलिए इसका वर्गांक निम्न प्रकार बनेगा ।

8[00] + -6= 806

शीर्षक 2

Collection of Short Stories 808.831

लघु कथाओं व संग्रह

अनुसूची में 808.831-.838 Specific scopes and types शीर्षक के नीचे आधार अंक 808.83 के साथ सारणी -3 के -301 से -308 अंकनों का इनमे से -30 को छोड़कर प्रयोग करने का निर्देश

दिया गया है । सारणी 3 में लघु कथाओं का अंकन -301 मिलता है । निर्देशानुसार जोड़ने पर अंतिम वर्गांक –

808.83 + [-30] = 808.831 बनेगा ।

शीर्षक 3

Collection of 19th Century Literature808.80034

19वीं शताब्दी व साहित्य संग्रह

खण्ड 2 की अनुसूची में 808.8001 -.8005 Collection from specific periods शीर्षक के नीचे दिय गये निर्देश के अनुसार सारणी -1 से 0901-0905 अनुक्रम का कोई भी मानक उपविभाजन लेकर उसमें से 090 छोड़कर शेष अंक को 808.800 आधार संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है । सारणी -1 में 19वीं शताब्दी का अंकन -09034 है । इसमें से 0909 छोड़कर शेष 34 को 808.800 आधार संख्या के साथ जोड़ दिया, इस प्रकार

808.800 + [-090] 3.4 = 808.80034 =Collection of 19th Century literature.

टिप्पणी: जब भाषा का नाम ही नहीं दिया हो तो मानक उपविभाजन सारणी -1 से समय की वर्ग संख्या लेकर प्रयोग में लाई जाती है ।

शीर्षक 4

Collection of 18th Century drama 808.82033

18th शताब्दी का नाटय संग्रह

अनुसूची में अंकन 808.82 के सामने तारांकित पद Collection of drama मिलता है । पाद टिप्पणी में तारांकित पद की वर्ग की संख्या के साथ केन्द्रित शीर्षक 808.81-808.88 के नीचे दी गई विशिष्ट तालिका के उपयोग का निर्देश दिया गया है । विशिष्ट तालिका में 01-05 Historical periods शीर्षक के नीचे मानक उपविभाजन सारणी से समय की वर्ग संख्या लाने का निर्देश दिया गया है । उसमें से -090 छोड़कर शेष अंक को 808.820 के साथ जोड़ने का निर्देश दिया गया है । सारणी -1 में 18वीं शताब्दी का अंकन -09033 मिलता है । निर्देशानुसार

808. 82 + 0 + - [090] 33 = 808.82033 =Collection of 18th Century drama.

शीर्षक 5

Collection of epic poetry of 20th Century808.813

20वीं शताब्दी व महाकाव्य

अनुसूचि में Collection Poetry का अंकन 808.81 दिया गया है तथा इसी के नीचे शीर्षक 808.812-818 के नीचे विभिन्न प्रकार के काव्य के अंकन को सारणी 3 के -102-108 अनुक्रम से लाकर उसमें से 10 को हटा कर शेष अंक को 808.81 आधार संख्या के साथ जोड़ने का निर्देश दिया गया है । सारणी 3 में महाकाव्य का अंकन -103 दिया गया है । यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखी जानी चाहिये कि साहित्य की विशिष्ट विधा के विशिष्ट प्रकार के साथ काल का प्रयोग नहीं किया जाता है । इस प्रकार अंतिम वर्गांक

808.81 + [-10] 3 =808. 813 बनेगा ।

शीर्षक 6

Collection of Literature displaying realism808.80

यथार्थवादी साहित्य ग्रंथ

अनुसूची में शीर्षक 808.801-.803 Collection displaying specific features मिलता है तथा इसके अन्तर्गत यह निर्देश दिया गया है कि आधार अंक 808.80 के साथ सारणी 3A के 1-3 अंकनों का प्रयोग कीजिये । सारणी 3A में Realism का अंकन 12 मिलता है । निर्देशानुसार जोड़ने पर अंतिम वर्गांक –

808.80 + 12 = 808.8012 बनेगा ।

शीर्षक 7

Critical appraisal of 20 th Century Literature809.04

20वीं शताब्दी के साहित्य व समीक्षात्मक मूल्यांकन

सामान्य साहित्य के इतिहास, विवरण, समीक्षात्मक मूल्यांकन, जीवनी आदि को वर्गांक 809 के अन्तर्गत वर्गीकृत किये जाने का प्रावधान है ।

अनुसूची में शीर्षक 809-.01-.05 Literature of specific periods के अन्तर्गत आधार अंक 8 कें साथ मानक उपविभाजन -0901-.0905 को जोड़ने का निर्देश दिया गया है । मानक उपविभाजन सारणी में 20वीं शताब्दी का अंकन 0904 मिलता है । निर्देशानुसार जोड़ने पर अंतिम वर्गांक –

8 + -0904 =809.04 बनेगा ।

शीर्षक 8

History of epic poetry809.13

महाकाव्य का इतिहास

अनुसूची में शीर्षक 809.1-.7 Literature of specific forms के अन्तर्गत आधार संख्या 809 के साथ 808.81 -808 -.87 अंकनों को उनमें से 808.8 हटा कर शेष अंक मे जोड़ने का निर्देश दिया गया है । निर्देशानुसार अंतिम वर्गांक =

809 + [808.8] 1 + [-10]3 = 809. 13 बनेगा ।

2. यदि शीर्षक में भाषा उपस्थित हो :

यदि किसी ग्रंथ के विषय शीर्षक में साहित्य की भाषा का नाम दिया गया हो, अर्थात् किसी विशेष भाषा का साहित्य हो, तो उसे अनुसूची में 810-890 Literature of specific languages अनुक्रम के अन्तर्गत सम्बन्धित भाषा के साहित्य में वर्गीकृत किया जायेगा । ऐसे शीर्षक का वगार्क बनाने के लिये सबसे पहले विशिष्ट भाषा के नाम की आधार संख्या 810-890 के अनुक्रम से ली जाती है । तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार सारणी 3 में दिये गये साहित्यिक उपविभाजनों का प्रयोग किया जाता है ।

शीर्षक 9

Encyclopaedia of Sanskrit Literature891.203

संस्कृत साहित्य वे विश्वकोष

अनुसूची में तारांकित पद संस्कृत साहित्य की आधार संख्या 891.2 दी गई है तथा इसमें सारणी 3 के संकेत के अनुसार मानक उपविभाजन सारणी -1 से विश्वकोष का अंकन -03 लाकर जोड़ने पर अंतिम वगार्क =

891.2 + -03 =891.203 बनेगा ।

शीर्षक 10

Collection of Marathi Literature891.4605

मराठी साहित्य व संग्रह

अनुसूची में तारांकित पद मराठी साहित्य की आधार संख्या 891.46 दी गई तथा सारणी 3 में संग्रह का अंकन -08 मिलता है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

891.46 + -08 = 891.4608 बनेगा ।

शीर्षक 11

Collection of Russian Literature for 1917-1945891.7080042

1917-1945 व रूसी साहित्य संग्रह

अनुसूची में तारांकित पद रूसी साहित्य की आधार संख्या 891.7 दी गयी है निर्देशानुसार इस आधार संख्या के साथ सारणी 3 से अंकन 080 जोड़ा गया तथा सारणी 3, में -08 के नीचे दिये गये निर्देश के अनुसार सारणी 3A से अंकन -01-09 Specific periods शीर्षक प्राप्त हुआ तथा इसी शीर्षक के नीचे दिये गये निर्देश के अनुसार -080 के साथ 0 अंक जोड़ा गया फिर उसके बाद सम्बन्धित साहित्य के लिये दी गई काल तालिका का अंकन 42 जोड़ दिया गया । (रूसी साहित्य के साथ समय जोड़ने हेतु अंकन 891.7 के नीचे काल तालिका दी गयी है ।) इस तालिका में 1917-1945 का अंकन 42 दिया गया है । इस प्रकार निर्देशानुसार अंतिम वर्गांक =

891.7+ -080 + 0 + 42 =891.7080042 बनेगा ।

शीर्षक 12

History of Tamil Literature894.81109

तमिल साहित्य व इतिहास

अनुसूचि में तारांकित पद तमिल साहित्य का अंकन 894.811 दिया गया है । सारणी 3 में इतिहास, समीक्षात्मक मूल्यांकन, विवरण आदि का अंकन -09 दिया गया है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक.

894.811 + -09 = 894.81109 बनेगा ।

शीर्षक 13

History of Tamil Literature of 1645-1845894.81109003

1645-1845 के तमिल साहित्य का इतिहास

अनुसूची में तारांकित पद तमिल साहित्य का अंकन 894.811 दिया गया है । सारणी 3 में अंकन -09001-09009 के अन्तर्गत भाषा के साहित्य के इतिहास का काल जोड़ने का निर्देश मिलता है । निर्देश के अनुसार 894.11 के साथ सारणी 3 से 0900 अंकन जोड़ा गया । इसके साथ सारणी 3 में -09001 से 09009 शीर्षक के नीचे दिये गये निर्देश के अनुसार 1645 से 1845 को सूचित करने वाले अंकन 3 का प्रयोग कर लिया गया । इसे खण्ड 2 से 894.8 के नीचे दी गई तालिका से लिया गया है जिसमें 1645-1845 के लिए अंकन 3 दिया गया है । इस प्रकार इनकों जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

894.811 + -900 + -3 = 894.81109003 बनेगा ।

टिप्पणी : यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखी जानी चाहिए कि विशिष्ट भाषाओं के साहित्य के हेतु प्रत्येक साहित्य के नीचे दी गई काल तालिका का ही प्रयोग किया जायेगा, न कि मानक उपविभाजन सारणी के अंकन 09 के अन्तर्गत की गई काल तालिका का । एक अन्य उल्लेखनीय बात यह है, कि यदि किसी भाषा का साहित्य एक से अधिक देशों में लिखा गया हो तो मुख्य- मुख्य देशों के साहित्य की अलग-अलग काल तालिकाएं खंड दो में उस भाषा के नीचे दी गई है । उदाहरणार्थ, अंग्रेजी साहित्य की इंगलैण्ड, एशियाई देशों, दक्षिणी अफ्रीका, के अतिरिक्त अन्य अफ्रीकी देशों, आस्ट्रेलिया, आयरलैंड न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिणी अफ्रीका के लिए पृथक्-पृथक् काल तालिकाए 820 के नीचे दी गई हैं ।

शीर्षक 14

Journal of Russian poetry891.71005

रूसी कविता की पत्रिका

यदि ग्रंथ की विषयवस्तु के शीर्षक में भाषा के नाम के साथ साहित्य का विशिष्ट रूप जैसे कविता, नाटक, कथा साहित्य आदि दिया गया हो तो सारणी 3 के पृष्ठ 391-398 पर दिये गये उपविभाजनों -1 से -8 एवं उनके उपविभाजनों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किये जाने का प्रावधान है ।

अनुसूची में तारांकित पद रूसी साहित्य का अंकन 891.7 दिया गया है । सारणी 3 में अंकन -1001-1007 का प्रयोग मानक उपविभाजनों हेतु किया गया है । मानक उपविभाजन सारणी -1 में पत्रिका का अंकन -05 दिया गया है । इस प्रकार इनको जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

891.7 + 1007 = 891.71005 बनेगा ।

शीर्षक 15

Journal of Russian drama891.72005

रूसी नाटक की पत्रिका

इस शीर्षक का वर्गांक भी उपयुक्त शीर्षक के समान ही बनाया जायेगा । -1005 में "1 पद्य" के अंकन के स्थान पर “2 नाटक” का अंकन प्रतिस्थापन करके उपविभाजन -2005 जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

-2

891.7 + [-1]005 = 891.72005 बन गया ।

शीर्षक 16

Collection of Spanish poetry 861.008

स्पेनिश पद्य संग्रह

अनुसूची में तारांकित पद स्पेनिश साहित्य की आधार संख्या 86 मिलती है । सारणी 3 में पद्य संग्रह का अंकन -1008 दिया गया है । इन दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

86 + -1008 = 861.008 बन गया ।

शीर्षक 17

Collection of Spanish essays

स्पेनिश निबन्ध साहित्य संग्रह

स्पेनिश साहित्य की आधार संख्या 86 के साथ उपर्युक्त शीर्षक में पद्य के लिये प्रयुक्त अंकन “1” के स्थान पर निबन्ध के लिये निर्धारित अंकन “4” लगा दिया इस प्रकार वर्गांक =

-4

86 + [-1]008 = 864.008 बन गया ।

शीर्षक 18

Collection of Spanish fiction dealing with fantasy863.008015

कल्पनात्मक स्पेनिश कथा साहित्य संग्रह

इस शीर्षक का वर्गांक भी शीर्षक 16 के समान ही बनाया जायेगा । यहां पर भी 86 आधार संख्या के साथ सारणी 3 से -1008 के स्थान पर कथा साहित्य के अंकन -3008 का प्रयोग किया गया तथा वहां पर -1008 के नीचे दिये गये निर्देश के अनुसार -3008 के साथ शून्य = 0 जोड़कर सारणी 3A से Fantasy का अंकन 15 लाकर जोड़ दिया गया ।, इस प्रकार अंतिम वर्ग संख्या

-3

86 + [-1] 0008+0+15 =863.008015 बनाई गई ।

शीर्षक 19

History of German poetry

जर्मन पद्य व इतिहास

अनुसूची में तारांकित पद जर्मन साहित्य की आधार संख्या 83 दी गयी है । सारणी 3 में पद्य के इतिहास, विवरण, समीक्षा, मूल्यांकन आदि का अंकन -1009 दिया गया है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

83 + 1009 = 831.009 बन गया ।

शीर्षक 20

History of German Drama 832.009

जर्मनी नाटक का इतिहास

इस शीर्षक का वर्गांक भी उपर्युक्त शीर्षक के समान ही बनेगा । पद्य के अंकन "1" के स्थान पर नाटक के अंकन "2" को लगा दिया । इस प्रकार अंतिम वर्गांक

-2

83 + [-1] 009 = 832.009 बन गया ।

शीर्षक 21

Studies of Human qualities in French poetry841.009353

फ्रेंच कविता में मानवीय गणों का अध्ययन

अनुसूची में तारांकित पद फ़्रेन्च साहित्य की आधार संख्या 84 दी गयी है । सारणी 3 में अंकन -1009 के अन्तर्गत आधार अंक 1009 के साथ सारणी 3A के 1-9 अंकनों के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 3A मानवीय गुणों का अंकन 353 दिया गया है । निर्देशनुसार जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

84 + 1009 + 353 = 841.009353 बन गया ।

शीर्षक 22

Collection of Danish poetry of Reformation period.839.811208

सुधारकालीन डेनिश का काव्य संग्रह

अनुसूची में तारांकित साहित्य की संख्या 839.81 दी गयी है । तथा इसी के नीचे काल तालिका में Reformation period का अंकन 2 दिया गया है । सारणी 3 में -11-19 poetry of specific periods शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार 839.81 के साथ -1Poetry का अंकन जोड़कर फिर उसके बाद उपर्युक्त अंकन 2 = Reformation period जोड़ दिया । तथा -11-19 के नीचे दिये गये निर्देश के अनुसार ही [-1008] में से 10 छोड़कर शेष 08 संग्रह (Collection) का अंकन 2 के साथ जोड़ दिया गया । इस प्रकार निर्देशानुसार अंतिम वर्ग संख्या =

839.81 + -1 +2 - [-10] 08 = 839.811208 बनाई गई ।

शीर्षक 23

Evaluation of Hindi love stories by Punjabi891.433085089142

पंजाबियों द्वारा हिन्दी के प्रेम कथा साहित्य व मूल्यांकन

अनुसूची में तारांकित पद हिन्दी साहित्य का अंकन 891.43 दिया गया है । सारणी 3 में तारांकित पद प्रेम कथाओं का अंकन -3085 दिया गया है । पाद टिप्पणी में तारांकित अंकन के साथ सारणी 3 में ही केन्द्रित शीर्षक -1-8 Specific forms के अन्तर्गत विशिष्ट तालिका में दिये गये अंकनों के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । इस विशिष्ट तालिका में पद critical appraisal का अंकन -09 मिलता है । तथा Evaluation भी इसी पद का पर्यायवाची शब्द है । इसी अंकन 09 के नीचे सारणी 3A से अंकन 1-9 लाकर 09 के ही साथ जोड़ने का निर्देश दिया है । सारणी 3-A में 8 =Literature for and by various special racial ethnic... शीर्षक के नीचे अंकने 8 के साथ सारणी -5 से विशिष्ट जाति का अंकन लाकर जोड़ने का निर्देश दिया गया है । सारणी -5 में पंजाबियों का अंकन 9142 है । इस प्रकार निर्देशानुसार तथा क्रमानुसार सभी उपर्युक्त अंकनों को जोड़ने पर हमारे विषय का अन्तिम वर्गांक =

891.42 -3085 + 09 + 8 + 9142 = 891.4330850989142 बन गया ।

4. शेक्सपीयर की कृतियों की तालिका

(Table of works about and by Shakespeare)

शेक्सपीयर की कृतियों की विशेष तालिका अनुसूची में अंकन 822.33 ने नीचे दी गई है, जिसके अन्तर्गत शैक्सपीयर द्वारा अथवा शेक्सपीयर पर लिखे गये ग्रंथों में व्यवस्थित किया गया है । वर्ण (Alphabet) A से N शेक्सपीयर की कृतियों के विविध रूपों यथा ग्रंथ सूची जीवनी, आलोचनात्मक अध्ययन आदि के लिए प्रयोग में लाये गये हैं और वर्ण 0 से Z शेक्सपीयर की अलग - अलग कृतियों व उनकी आलोचना के लिए युग्म अंकों के रूप में प्रयुक्त किये गये हैं । प्रत्येक युग्म प्रथम अंक का प्रयोग मल पाठ के लिए तथा द्वितीय अंक का प्रयोग विवरण (Description) एवं आलोचनात्मक अध्ययन (Critical appraisal) के लिए किये जाने का निर्देश है । उदाहरणार्थ -

शीर्षक 24

Biography of Shakespeare 822.33B

शेक्सपीयर की जीवनी

अनुसूची में 822.33 William Shakespeare शीर्षक मिलता है एवं इसके नीचे शेक्सपीयर की कृतियों, संग्रह, जीवनी आदि की तालिका दी गई है जिसमें अंकन 822.33B के सामने Biograhpy शब्द दिया गया है जिसका तात्पर्य है Biography of Shakespeare यही इस ग्रंथ का अन्तिम वर्गांक होगा ।

शीर्षक 25

Complete works of Shakespeare in English with notes.822.33J

शेक्सपीयर की आम्ल भाषा में टिप्पणी सहित समस्त -कृतियां....

अनुसूची में अंकन 822.33 के अन्तर्गत वर्ण J के सामने पद Complete works of in English with notes मिलता है । यही इस शीर्षक का अंतिम वर्गांक होगा ।

शीर्षक 26

The Merchant of Venice by Shakespeare822.33P3

शेक्सपीयरकृत मरचेन्ट आफ वेनिस

अनुसूची में अंकन 822.33 के अन्तर्गत P3-4 के सामने पद The Merchant of Venice मिलता है । चूंकि युग्म के प्रथम अंक का प्रयोग मूल पाठ के लिए करने का निर्देश है, इसलिए इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक =

822.33P3 बनेगा ।

शीर्षक 27

Criticism of the Merchant of Venice822.33P4

मरचैण्ट ऑफ वेनिस की आलोचना

अनुसूची में अंकन 822.33 के अन्तर्गत P3-4 के सामने पद The Merchant of Venice दिया गया है । चूंकि युग्म के द्वितीय अंक का प्रयोग विवरण एवं आलोचनात्मक अध्ययन के लिए करने का निर्देश है, इसलिए इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक =

822.33P4 बनेगा ।.

शीर्षक 28

Tragedies of Shakespeare822.33 S-V

शेक्सपीयर के दुखान्त नाटक

अनुसूची में अंकन 822.33 के अन्तर्गत S-V के सामने tragedies पद मिलता है । इसलिए इस ग्रंथ का अंतिम वर्गांक =

822.33S-V बनेगा ।

5. सारांश

1. यदि किसी ग्रंथ की विषयवस्तु में केवल सामान्य साहित्य या उसके किसी पक्ष का ही उल्लेख हो, अर्थात उस ग्रंथ में किसी विशिष्ट भाषा के साहित्य का वर्णन न हो तो उसका वर्गीकरण खण्ड

2 के 801 के 809 के अनुक्रम में संबंधित वर्ग संख्या के अन्तर्गत करना चाहिये। जैसे – History of Literature =809 (साहित्य का इतिहास)

2. यदि सामान्य साहित्य का वर्णन समय के अनुसार हो तो मानक उपविभाजन सारणी-1 में 0901-0905 के अनुक्रम से संबंधित समय का प्रतीक चिन्ह लेकर उसका निदेशों के अनुसार प्रयोग करना चाहिये। जैसे, Collection of 20th Century Literature (बीसवीं शताब्दी के साहित्य का संग्रह) = 808.8004
3. सारणी 3 का प्रयोग

   (क) 801 से 809 के अनुक्रम में कुछ वर्ग संख्याओं के साथ (जैसे 808.1, 802.1, 808.3 आदि) सारणी 3 के कुछ अंकनों का प्रयोग निर्देशों के अनुसार किया जाता है।

   (ख) 810 से 890 के अनुक्रम में तारांकित (*) साहित्यों की आधार वर्ग संख्याओं के साथ अथवा आधार संख्याओं के अभाव में केवल तारांकित साहित्य के नाम के पहले अंकित वर्ग संख्या के साथ सारणी -3 के सभी अंकनों का प्रयोग निर्देशों के अनुसार किया जाता है। जैसे Hindi Drama (हिन्दी नाटक) = 891.432
4. सारणी 3A का प्रयोग -

   (क) 801 से 809 के अनुक्रम में कुछ वर्ग संख्याओं के साथ (जैसे, 808.819, 808.829, 808.839 आदि) सारणी -3A के कुछ अंकनों का प्रयोग निर्देशों के अनुसार किया जा सकता है। जैसे Collection of poetry about animals (पशुओं संबंधी पद्यों का संग्रह) =808.81936

   (ख) सारणी -3 में -08 तथा -091-099 उपविभाजनों के नीचे दिये गये निर्देशों के अनुसार, अथवा सारणी -3 के ही तारांकित अंकनों के लिये दिये गये निर्देशों के अनुसार सारणी -3A का प्रयोग होता है। जैसे Idealism in English epic poetry (अंग्रेजी महाकाव्यों में आदर्शवादी) =821.030913
5. यदि किसी भाषा के साहित्य का वर्णन समय की अवधि के अनुसार हो तो खण्ड -2 में संबंधित भाषा के अन्तर्गत दी गई समय सारणी का प्रयोग निर्देशों के अनुसार करना चाहिए। किन्तु आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिये 891.4 के अन्तर्गत तथा द्रविड़ मूल की भाषाओं के लिये, जैसे तमिल, तेलगु आदि, 894.8 के नीचे उल्लिखित समय सारणी का प्रयोग करना चाहिए।
6. यदि किसी ग्रंथ की विषय वस्तु में संबंधित साहित्य की भाषा, उसके रूप (form), समय तथा उसके किसी पक्ष का एक साथ वर्णन हो तो, उन्हें निर्देशों के अनुसार भाषा + रूप + समय + पक्ष के क्रम में रखना चाहिये, जैसे:

   English 82
   Poetry1821.91408
   Later 20th Century
   Collection 08

   } 821.91408

6. वर्गीकृत शीर्षक (Worked out 914)

उपर्युक्त ढंग से समझाई गई विधि द्वारा निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाइये तथा सामने दिये गये वर्गांक से मिलाइये।

1. Literary awards
   8[00] + -079 =807.9
2. Rhetoric of epic poetry
   808.1 + [-10]3 =808.13
3. Collection of Literature displaying idealism
   808.80 + -13 =808.8013
4. Collection of 19th century poetry
   808.810 + [090]34 =808.81034
5. Collection of deama on social themes
   808.829+355 =808.829355
6. Collection of poetry of 1970's
   808.81+0+[090]47 =808.81047
7. Hindi poetry
   891.43-1 =891.431
8. Hindi frama from 1920 to 1940
   891.43-2 + 6 =891.4326
9. International Conference on American Literature
   81-0601 =810.601
10. History of 20th Century American Literature
    82+ 0900 + 5 =810.9005
11. Collection of English poetry of Victorian period
    82+1+8+ -08 =821.808
12. Critical appraisal of English
    Fiction of Victorian period
    82 + 3 + 8 + -09 =823.809
13. Telugu suspense fiction
    894.824 + -30872 =894.82730872
14. English sonnets
    82 + 1042 =821.042
15. History of American epic poetry
    81 + -103 + -09 =811.0309

16. History of America literature for children
    81 + -09 + 9282 =810.99282
17. Biography of Hindi poets
    891.43 + -1009 =891.431009
18. Encyclopaedia of Hindi poetry
    891.43 + -1 + -003 =891.431003
19. Collection of romantic Hindi drama for Radio and television
    891.43 + -202 + -08 + 145 =891.4320208145
20. Quotations of Shakespeare
    822.33H =822.33H
21. As you like it by Shakespeare
    822.3303 =822.3303
22. Criticism of Hamlet
    822.33S8 =822.33S8
23. Commedies of Shakespeare
    822.330-R =822.330-R
24. History of English poetic drama
    -2
    82 + [-1] 009 =822.009
25. Collection of German science fiction
    83 + 30876 + 08 833.087608

7. अभ्यास के लिये शीर्षक (Assignment)

निम्नलिखित ग्रन्थों के वर्गांक बनाइये:

1. Marathi drama
2. Sanskrit epic poetry
3. Urdu one act plays
4. Greek tragedies
5. Collection of Japanese love poems
6. Critical evaluation of African literature
7. A Collection of Bengali poems
8. All India Conference on American poetry
9. Descriptive account of children literature

10. Collection of literature by Punjabis
11. Biography of English poets
12. Journal of Hindi poetry
13. Complete works of Shakespeare in English with notes.
14. Hamlet by Shakespeare
15. Criticism of Macbeth of Shakespeare
16. Biography of English debators
17. Encyclopaedia of literature
18. Everyday life in French fiction
19. Criticism of Russian drama of 19th century
20. Realism in French drama
21. Prem Chand – A Critical study (Born 1880)
22. Critical study of 20th century Spanish drama
23. Post-Elizabethan English poetry
24. History and criticism of literature by persons of India
25. Criticism of Urdu poetry displaying horror

8. ग्रंथ सूची

पाठ 4 के अन्त में

कोर्स -2B: पुस्तकालय वर्गीकरण - प्रायोगिक : दशमलव वर्गीकरण

इकाई-4 दशमलव वर्गीकरण : प्रयोगिक - IV सारणी - 4 : विशिष्ट भाषा विषयक उपविभाजन एवं सारणी -6: भाषायें का प्रयोग

उद्देश्य : (Objectives)

सारणी 4 विशिष्ट भाषा विषयक उपविभाजनों एवं सारणी 6 भाषाओं के प्रयोग का ज्ञान कराना ।

संरचना विषयवस्तु (Structure)

1. विशिष्ट भाषा विषयक उपविभाजन तथा इनके प्रयोग के नियम
2. विशिष्ट भाषा विषयक उपविभाजनों पर आधारित ग्रंथों का वर्गीकरण
3. एक भाषा कोश, भाषा मूलक विशिष्ट कोश एवं द्वैभाषिक शब्दकोश के वर्गांक बनाने की का वर्णन
4. सारणी 4 के आधार पर वर्गीकृत शीर्षक
5. अभ्यास के लिए शीर्षक
6. भाषाएं सारणी -6 के प्रयोग के नियम
7. भाषाएं सारणी -6 पर आधारित ग्रंथों का वर्गीकरण
8. सारणी -6 के आधार पर वर्गीकृत शीर्षक
9. सारणी 6 पर आधारित अभ्यास के लिये शीर्षक
10. सारांश
11. ग्रंथसूची

1. सारणी 4 भाषा विषयक उपविभाजन तथा इनके प्रयोग के नियम (Table 4: Subdivision of individual languages)

भाषा विषयक उपविभाजन सारणी, जिसका प्रयोग मुख्य वर्ग 400 के अन्तर्गत किया जाता है दशमलव वर्गीकरण के खण्ड 1 पृष्ठ 404-407 पर दी गई है । विभिन्न भाषाओं के विविध पहलुओं – जैसे ध्वनि शास्त्र (Phonology), स्वरलिपि (Notation), पुरालिपिशास्त्र (Paleography) कोष (Dictionary) व्याकरण (Grammer) आदि का अध्ययन करने के लिए इस सारणी का प्रयोग किया जाता है । इस सारणी में दिये गये अंकनों का प्रयोग अकेले नहीं किया जा सकता अपितु उन्हें आवश्यकतानुसार किसी भाषा विशेष की सूचक आधार संख्या, जिसके साथ तारक (*) का चिन्ह लगा हुआ हो, के साथ ही जोड़ा जा सकता है । ये आधार संख्यायें खण्ड 2 में 420 से 490 तक के वर्ग समूह के अन्तर्गत दी गई है । 420 से 490 तक के वर्ग समूह में कुछ तारांकित भाषा शीर्षकों के अन्तर्गत तो आधार संख्यायें निर्धारित कर दी गई हैं, जो संबंधित भाषा की आधार संख्या कहलाती है । किन्तु कुछ तारांकित भाषा शीर्षकों के अन्तर्गत आधार संख्या नहीं दी गई है । अत: जहां आधार संख्या निर्धारित कर दी गई है,

वहां तो सारणी -4 का कोई भी उपविभाजन (sub-division) निर्दिष्ट आधार संख्या के साथ जोड़ दिया जाता है । किन्तु जहाँ आधार संख्या नहीं दी गई है वहां तारांकित भाषा शीर्षक के सामने दी गई वर्ग संख्या को ही आधार संख्या मान लिया जाता है और उसके साथ, आवश्यकतानुसार, सारणी -4 के उपविभाजन जोड़ दिये जाते हैं । जैसे, आंग्लभाषा 420 के अन्तर्गत आंग्ल भाषा की आधार संख्या 42 दी गयी है । किन्तु 491.2 संस्कृत भाषा की वर्ग संख्या के अन्तर्गत आधार संख्या नहीं दी गयी है । ऐसी स्थिति में 491.2 को ही आधार संख्या मान लेना चाहिए ।

2. भाषा विषयक उपविभाजन सारणी पर आधारित ग्रंथों व वर्गीकरण।

शीर्षक 1 Derivation of Hindi words491.432

हिन्दी शब्दों की व्युत्पत्ति

अनुसूची में तारांकित पद हिन्दी भाषा का अंकन 491.43 दिया गया है । यही हिन्दी भाषा की आधार संख्या भी है । सारणी 4 भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में पद etymology अंकन -2 दिया गया है । Etymology शब्द derivation शब्द का ही पर्यायवाची है । यदि किसी भाषा के शब्दों के Roots तथा उनके origin का प्रतीक चिन्ह लगाना हो तो भी -2 अंकन का ही प्रयोग करना चाहिये । इस प्रकार उपर्युक्त शीर्षक की वर्ग संख्या

491.43 + .2 =491.432 बनाई गई ।

शीर्षक 2

German Alphabets431.1

जर्मन वर्णमाला

अनुसूची में तारांकित जर्मन भाषा की आधार संख्याओं का अंकन 43 दिया गया है । भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में alphabets का अंकन -11 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक 43 +- 11 = 431.1 बनाया गया है ।

शीर्षक 3

Sanskrit Reader491.286

संस्कृत रीडर (पाठमाला)

अनुसूची में तारांकित संस्कृत भाषा का अंकन 491.2 दिया गया है तथा आधार संख्या के अभाव में इसी को आधार संख्या मान लिया गया है । भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में रीडर का अंकन -86 दिया गया है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

491.2 + - = 491.286 बनाया गया ।

शीर्षक 4

A study of early Kannad Writing494.81417

कन्नड भाषा की पुरालिपि व अध्ययन

अनुसूची में तारांकित कन्नड भाषा का अंकन 494. 814 दिया गया है । भाषा विषयक सारणी में पुरालिपिशास्त्र का अंकन -17 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक = 494. 814 + -17 = 494.81417 बनेगा ।

शीर्षक 5

Pronunciation of English Words428.1

अंग्रेज़ी शब्दों का उच्चारण

अनुसूची में तारांकित अंग्रेजी भाषा का अंकन 420 दिया गया है जिसकी आधार संख्या 42 है । भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में शब्दों के Pronunciation का अंकन -81 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

42 + -81 = 428.1 बनेगा ।

शीर्षक 6

Malayalam Grammer4943.8125

मलयालम व्याकरण

अनुसूची में तारांकित मलयालम भाषा का अंकन 494:812 दिया गया है । भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में व्याकरण का अंकन -5 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक = 494.812 + -5 =494.8125

भाषा विषयक उपविभाजन सारणी -4 का भाषाएं सारणी-6 द्वारा विस्तारण

(Extension of subdivisions of individual language by language table-6)

सारणी 4 के कुछ अंकनों जैसे- 24-32 से -39, -824, -864 के नीचे उन्हें सारणी -6 के अंकनों द्वारा विस्तारित करने का निर्देश दिया गया । शीर्षक 7, 8, एवं 11 इन्हीं पर आधारित हैं ।

शीर्षक 7

Use of Sanskrit words in Hindi Language491.4324912

हिन्दी भाषा में संस्कृत शब्दों का प्रयोग

अनुसूची में तारांकित हिन्दी भाषा का अंकन 491.43 दिया गया है, भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में अंकन -24 Foreign elements के अन्तर्गत सारणी 6 से उस भाषा का अंकन लाकर जोड़ने व निर्देश दिया गया है । जिसके शब्दों का प्रयोग हुआ है । यहाँ संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है तथा सारणी -6 में संस्कृत भाषा का अंकन -912 दिया गया है । इस प्रकार तीनों में जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

491.43 + -24 + -912 = 491.4324912

शीर्षक 8

English Reader for Italian speaking People428.6451

इतालची भाषा भाषी व्यक्तियों के लिए इंगलिश रीडर (पाठमाला)

अनुसूची में तारांकित अंग्रेजी भाषा का अंकन 420 दिया गया है । इसकी आधार संख्या 42 है । भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में -864 के आगे पद “For those whose native language is different” दिया गया है जिसके अन्तर्गत सारणी 6 अंकन के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी -6 में Italian भाषा का अंकन -51 दिया गया है । तीनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

42 + -864 + -51 =428.6451

नोट: यहां पर याद रखना जरूरी है कि जिस भाषा की पाठ माला होती है उस भाषा व अंकन 420 से 490 के वर्ग समूह से लिया जाता है ।

3. एक भाषिक शब्दकोश (Unilingual Dictionary)

एक भाषा के शब्दकोष वे शब्दकोष होते हैं जिनमें किसी भाषा के शब्दों का अर्थ उसी भाषा में दिया गया हो, अर्थात् यदि शब्दकोष एक ही भाषा का हो तो उसका वर्गांक बनाने के लिये सारणी -4 के पृष्ठ 405 पर दिये गये अंकन -3 का प्रयोग तारांकित विशिष्ट भाषा की आधार संख्या के साथ जोड़कर बनाने का प्रावधान है । यहां यह बात विशेष रूप से स्थान में रखनी चाहिये कि भाषा के शब्दकोश की वर्ग संख्या का निर्माण करने के लिये मानक उपविभाजन सारणी -। से -03 का प्रयोग नहीं किया जाता । मानक उपविभाजन -03 का प्रयोग केवल विशिष्ट विषयों के कोषों का वर्गांक बनाने हेतु किया जाता है ।

शीर्षक 9

Russian dictionary491.73

रूसी शब्दकोष

अनुसूची में तारांकित रूसी भाषा का अंकन 491.7 दिया गया है । रूसी भाषा की आधार संख्या भीँ यही है । भाषा विषयक उपविभाजन सारणी -4 में शब्दकोष का अंकन -3 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

491.7 + -3 = 491.73

3.1 विशिष्ट कोष (Specialized Dictionary)

किसी भाषा के विशिष्ट कोष, जैसे शब्द संक्षेप (Abbreviations) विलोम शब्द (Antonyms), पर्यायवाची शब्द (Synonyms) भिन्नार्थक शब्द (Homonyms) कोष आदि की वर्ग संख्याओं का निर्माण करना हो तो सारणी -4 के अंकन -31 Specialized Dictionary का उपयोग किया जाता है ।

शीर्षक 10

Dictionary of French abbreviations433.1

फ्रेंच शब्द-संक्षेप कोष

अनुसूची में तारांकित फ्रेन्च भाषा का अंकन 440 दिया गया है जिसकी आधार संख्या 44 है । भाषा विषयक उपविभाजन सारणी -4 में शब्द-संक्षेप कोष का अंकन -31 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

44 + -31 = 443.1

3.2 द्विभाषिक शब्द कोष (Bilingual Dictionary)

दो भाषाओं के शब्द कोष का वर्गांक बनाने से पर्व सारणी -4 पृष्ठ 405 पर अंकन -32 -39 (Bilingual dictionary) के नीचे दी गई टिप्पणी को विशेष ध्यान से पढ़ा जाना चाहिये । इसमें आधार अंक -3 के साथ सारणी 6 से द्वितीय भाषा का अंकन -2 से -9 लाकर जोड़ने का निर्देश दिया गया है । इन निर्देशों के अनुसार कम प्रयोग में (कम प्रचलित) आने वाली भाषा का अंकन पहले आता है, क्योंकि ऐसे शब्द कोष का प्रयोग वे ही पाठक करेंगे जो कि उस (कम प्रचलित भाषा) को सीखना चाहते हैं । इसलिये ऐसे शब्द कोषों को कम प्रचलित भाषा में वर्गीकृत किये जाने का प्रावधान है । किन्तु यदि

किसी भौगोलिक क्षेत्र में दोनों ही भाषायें समान रूप से प्रयोग में लायी जाती हों या दोनों ही बराबर महत्व की हो या कौन सी भाषा कम प्रचलित है व कौन सी अधिक प्रचलित है, इसका निर्धारण न किया जा सकें, तो ऐसी अवस्था में जिस भाषा का अंकन गणनात्मक दृष्टि से अनुसूची में बाद में आता हो, उसे पहला स्थान देकर उसमें वर्गीकृत करना चाहिये । इस प्रकार एक ही द्विभाषीय कोष का वर्गांक विभिन्न भौगोलिक सीमाओं में अलग - अलग हो सकता है । जैसे English-French dictionary को यदि इंग्लैंड के ग्रंथालय में वर्गीकृत किया जायेगा तो फ्रेंच भाषा में वर्गीकृत करके अन्तिम वर्गांक 443.21 बनाया जायेगा किन्तु इसी शब्दकोष को फ्रांस के ग्रंथालयों में वर्गीकृत किया जायेगा तो इसको इंगलिश भाषा में वर्गीकृत किया जायेगा । क्योंकि फ्रांस में इंगलिश भाषा का प्रचलन कम है । इस प्रकार अंतिम वर्गांक 423.41 बनेगा । किन्तु यदि उपर्युक्त कोष को भारतीय ग्रंथालयों में वर्गीकृत किया जाये तो इसको फ्रेन्च भाषा के अर्न्तगत वर्गीकृत किया जायेगा, क्योंकि भारत में दोनों ही भाषाओं का कम प्रचलन है तथा यह निर्णय करना कि कौन सी भाषा कम प्रचलन में है और कौन सी अधिक, कठिन है । ऐसी स्थिति में नियमानुसार फ्रेन्च भाषा का अंकन 44 जो कि गणनात्मक दृष्टि से इंगलिश भाषा के अंकन 42 के बाद में आता है, को पहले रखते हुए अंतिम वर्गांक =

44 + -3 + 21 = 443.21 बनाया जायेगा ।

शीर्षक 11

German French dictionary443.31

जर्मन - फ्रेंच शब्दकोष

भारत में दोनों ही भाषाओं का प्रचलन कम है अत: फ्रेंच भाषा का अंकन 44 जो गणनात्मक क्रम में 43 (German) के बाद आता है, पहले लिया जायेगा और जर्मन भाषा का अंकन सारणी -6 से लाकर -3 शब्दकोष के अंकन के साथ जोड़ा जायेगा । इस प्रकार अंतिम वर्गांक =

443.31बनाया जायेगा ।

शीर्षक 12

Russian-Hindi Dictionary491.7391431

रूसी - हिन्दी शब्दकोष

उपर्युक्त शीर्षक में रूसी भाषा हिन्दी भाषा की तुलना में कम प्रयोग में आने वाली भाषा है । इस प्रकार रूसी भाषा की आधार संख्या 491.7 के साथ भाषा विषयक उपविभाजन सारणी सें शब्दकोष का अंकन -3 जोड़कर सारणी - 6 से हिन्दी भाषा का अंकन -91431 लाकर जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

491.7 + -3 + -91431 = 491.7391431 बनाया जायेगा ।

4. सारणी 4 के आधार पर वर्गीकृत शीर्षक (Worked Out titles)

उपर्युक्त ढंग से समझाई गई विधि द्वारा निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाइये तथा सामने दिये गये वर्गांकों से मिलाइये :

1. Derivation of Sanskrit words

   491.2 + -2 =491.22

2. English grammer

   42+ -5 =425

3. A Study of words of Hindi language
   491.43 + -81 =491.4381
4. English reader
   42+-86 =428.6
5. Spellings of Russian words
   491.7+ -81 =491.781
6. Alphabets of Urdu language
   491.439+-11 =491.43911
7. Learn French through structural approach
   44+-82 =448.2
8. How to translate in Hindi from other languages
   491.43 + -802 =491.43802
9. German phonology
   43+ -15 =431.5
10. An analysis of the Chinese language ;
    an etymological approach
    495.1+ -2 =495.12
11. Persian into notation
    491.55+ -16 =491.5516
12. Borrowed elements in Marathi
    491.46+-24 =491.4624
13. Sanskrit words in Telugu languages
    494.827+-24 + -912 =494.82724912
14. German desk dictionary
    43+-3 =433
15. English primer for Hindi speaking readers
    42 + -864 + -91431 =428.6494131
16. Russian Punjabi dictionary
    491.7 + -3 + -9142 =491.739142
17. Concise Arabic-Hindi dictionary
    492.7 + -3 + -91431 =492.7391431
18. Learning Japanese (A reader for English
    Speaking people)
    495.6 + -864 + -21 =495.686421

5. सारणी 4 पर आधारित अभ्यास के लिए शीर्षक (Assignment)

निम्नलिखित ग्रंथो के वगार्क बनाइये :

1. Chinese grammer
2. Pronunciation of Japanese words
3. German alphabets
4. Etymology of Hindi words
5. Sanskrit Paleography
6. Foreign elements in Hindi language
7. Latin words in English language
8. Tamil reader
9. French reader for Hindi speaking people
10. Hindi Urdu dictionary
11. French abbreviations–a dictionary
12. Structural approach to English language for Urdu speaking people
13. English-Hindi dictionary
14. Use of Persian words in Urdu
15. Tamil reader for Bengali speaking people.
16. Meaning of Sanskrit words
17. English phonetics
18. Hindi reader
19. Dictionary of Swedish synonyms
20. Learn Hindi through structural approach

6. भाषायें सारणी-6 के प्रयोग के नियम (Table 6: Languages)

सारणी 6 दशमलव वर्गीकरण खण्ड 1 के पृष्ठ 418-31 पर दी गई है । इसमें विश्व की अधिकांश भाषाओं के अंकन दिये गये हैं । इस सारणी के अंकनों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता है तथा अनुसूचियों में केवल उन्हीं स्थानों पर इसका उपयोग किया जा सकता है वहां पर इसके प्रयोग के दिये है । अन्य सहायक सारणियों के कुछ अंकनों के साथ भी जहां पर इस सारणी के अंकनों के प्रयोग सम्बन्धी निर्देश दिये गये हों, वहां भी इसका प्रयोग किया जा सकता है । उदाहरणार्थ, भौगोलिक सारणी -2 में अंकन -175 ,भाषा विषयक उपविभाजन सारणी -4 के अंकन -24, 32-39, -824 एवं -864 के अन्तर्गत इस सारणी के अंकनो के प्रयोग का प्रावधान किया गया है । इस प्रकार अनुसूचीयों में भी अंकन 033 से 036, 038 से 039, 398.9, 372.65, 220.5 आदि के अन्तर्गत भी इस सारणी के अंकनों के प्रयोग का प्रावधान है । मानक उपविभाजन सारणी 1 में भी -032-039 के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार -31 के साथ सारणी -6 का अंकन जोड़ा जा सकता है ।

इस सारणी के अंकनों का प्रयोग उपर्युक्त भाषा विषयक उपविभाजन सारणी -4 के शीर्षक 7, 8 एवं 11 के अन्तर्गत किया जा चका है । कुछ अन्य उदाहरणों द्वारा इस सारणी के प्रयोग मे और अधिक स्पष्ट किया जा रहा है ।

7. भाषायें सारणी-6 पर आधारित ग्रंथों व वर्गीकरण

शीर्षक 13

Translation of Bible in Hindi220.591431

बाइबल का हिन्दी अनुवाद

अनुसूची में अंकन 220.5 के सामने Modern versions and translations (of Bible) दिया गया है तथा इसके नीचे अंकन 220.53.-.59 के अन्तर्गत बाइबल का अन्य भाषाओं में अनुवाद का अंकन बनाने के लिए 220.5 आधार संख्या के साथ सारणी -6 के अंकन -3 से -9 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में Standard Hindi का अंकन -91431 दिया गया है । इस प्रकार इन दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

220.5 + -91431 =220.591431 बनेगा ।

शीर्षक 14

Papiamento Language Encyclopedia036.8

पेपियामेन्टो भाषा में विश्वकोष

अनुसूची में Spanish and Portuguese भाषा के विश्वकोष का अंकन 036 दिया गया है तथा इसके नीचे आधार संख्या 03 के साथ सारणी 6 के अकंन -61 -69 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में Papiamento language का अंकन -68 दिया गया है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

03 + -68 =036.8 बनेगा ।

शीर्षक 15

Dictionary of Punjab Proverbs.398.9914203

पंजाबी कहावतों व कोष

अनुसूची में Proverbs का अंकन 398.9 दिया गया है तथा इसके नीचे सारणी -6 के के अंकनों के प्रयोगों का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में पंजाबी भाषा का अंकन -9142 दिया गया है । कोष व अंकन मानक उपविभाजन सारणी में 03 दिया गया है । इस प्रकार तीनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

398.9 + -9142 + -03 =398.9914203 बनेगा ।

शीर्षक 16

Sanskrit Calligraphy 745.619912

संस्कृत सुलेख

अनुसूची में अन्य भाषाओं के सुलेख का अंकन 745.619 दिया गया है । तथा इस शीर्षक के नीचे आधार अंक 745.619 के साथ सारणी 6 के अंकन -91 -99 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में संस्कृत का अंकन -912 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अन्तिम वर्गांक =

745.619 + -912 =745.619912 बनेगा ।

शीर्षक 17

Translation of Koran in Sindhi Language297.122591411

सिन्धी भाषा में कुरान व अनुवाद

अनुसूची में कुरान के अनुवाद का अंकन 297.1225 दिया गया है तथा इसके नीचे सारणी 6 के अंकनों के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी में 6 सिन्धी भाषा का अंकन -91411 दिया गया है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

297.1225 + -91441 = 297.122591411 बनेगा ।

शीर्षक 18

Urdu in elementary schools372.6591439

प्रारम्भिक विद्यालयों में उर्दू

अनुसूची में Foreign languages (in elementary education) का अंकन 372.65 दिया गया है तथा इसके नीचे आधार संख्या 372.65 के साथ सारणी 6 के अकंन -1 से -9 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में उर्दू भाषा का अंकन -91439 दिया गया है । इस प्रकार दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

372.65 + -91439 = 372.6591439 बनेगा ।

शीर्षक 19

General collection of quotations in German Languages083.1

जर्मन भाषा के उद्धरणों का सामान्य संकलन

अनुसूची में Germanic languages के सामान्य, संकलन का अंकन 083 दिया गया है । इसके नीचे आधार अंक 08 के साथ सारणी 6 के अंकन -31 से -394 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में जर्मन भाषा का अंकन -31 दिया गया है । दोनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

08 + - 31 = 083.1 बनेगा ।

शीर्षक 20

Saptahik Hindustan, a general magazine in Hindi059.91431

साप्ताहिक हिन्दुस्थान, सामान्य पत्रिका-हिन्दी भाषा में

साप्ताहिक हिन्दुस्थान हिन्दी भाषा में प्रकाशित एक सामान्य पत्रिका है । अनुसूची में कुछ भाषाओं की सामान्य पत्रिकाओं के लिए अंकन 051 से लेकर 058 तक का प्रावधान किया गया है । तथा शेष भाषाओं की सामान्य पत्रिकाओं कों अंकन 059 के अन्तर्गत वर्गीवृत करने का प्रावधान है । इसके नीचे आधार संख्या 059 के साथ सारणी 6 के अंकन -2 से -9 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में हिन्दी भाषा का अंकन -91431 दिया गया है । इस प्रकार दोनों के जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

059 + -91431 = 59.91431 बनेगा ।

शीर्षक 21

History of general Libraries in French speaking Countries027.017541

फ्रेंच भाषा भाषी देशों में ग्रंथालयों का इतिहास

अनूसूची में सामान्य ग्रंथालयों का अंकन 027 दिया गया है । इसके नीचे .01 -.09 Geographical treatment के अन्तर्गत आधार संख्या 027.0 के साथ भौगोलिक उपविभाजन सारणी के अंकन 1-9 के प्रयोग का निर्देश दिया गया हैं । भौगोलिक उपविभाजन सारणी -2 में अंकन -175 के सामने 'regions where specific languages predominate' पद दिया गया है एवं इसके नीचे भी आधार संख्या -175 के साथ सारणी 6 के अंकन -1 से -9 के प्रयोग का निर्देश दिया गया है । सारणी 6 में फ्रेंच भाषा का अंकन -41 दिया गया है इस प्रकार तीनों को जोड़ने पर अंतिम वर्गांक =

027.0 + -175 + -41 =027.017541 बनेगा ।

8. सारणी 6 के आधार पर वर्गीकृत शीर्षक (Worked out titles)

उपर्युक्त ढंग से समझाई गई विधि द्वारा निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाइये तथा सामने दिये वर्गांको से मिलाइये :

1. Translation of Bible Japanese
   220.5+ -956 =220.5956
2. Translation of Koran in Tibetan language
   297.1225+-9541 =297.12259541
3. Marathi Proverbs
   398.9+ -9146 =398.99146
4. Chinese languages general serial publication
   059+-951 =059.951
5. Sarita; a General fortnightly in Hindi
   -91431 =059.91431
6. Hindi Vishva-Kosh
   039 + -91431 =039.91431
7. Translation of Talmudic literature in
   Swedish language 296.1205 + -397 =296.1205397
8. General collection of quotations in Italian
   Language 08 + - 51 =085.1
9. History of general libraries in English speaking countries
   027.0+ -175 + -21 =027.017521
10. Hindi calligraphy
    745.619 + -94131 =745.61991431
11. Women education in Hindi speaking countries
    376.9 + -175 + -91431 =376.917591431

9. सारणी 6 पर आधारित अभ्यास के लिए शीर्षक (Assignment)

निम्नलिखित ग्रंथों के वर्गांक बनाइये

1. Bible in Bengali
2. French languages General Encyclopedia
3. Hindi proverbs
4. Urdu calligraphy
5. Malayalam language General serial publication
6. Translation of Talmudic literature in Spanish languages
7. History of general libraries in Spanish speaking countries
8. General collection of quotations of Sanskrit language.
9. Latin in elementary schools.
10. Dharamyuga – a General magazine in Hindi
11. Women education in the Arabic speaking countries
12. Urdu language General Encyclopedia

10. सारांश

विभिन्न भाषाओं के विभिन्न पहलुओं जैसे ध्वनिशास्त्र, वर्णमाला, शब्दों उद्‌भव विकास, व्याकरण, कोष आदि से संबंधी ग्रंथ भी, प्रकाशित होते है । इस प्रकार के पहलुओं को व्यक्त करने के लिये भाषा विषयक उपविभाजन सारणी -4 का उपयोग किया जाता है । इस सारणी के अंकनों का प्रयोग खण्ड -2 अनुसूचीयों 430 से 490 के अनुक्रम में तारांकित (*) भाषाओं के नीचे दी गई है सभी आधार संख्याओं के साथ अथवा आधार संख्याओं के अभाव में तारांकित भाषा के नाम के पहले अंकित वर्ग संख्या के साथ निर्देशों के अनुसार किया जा सकता है । जैसे

Hindi Grammer =491.43 + 5 =491.435

सारणी -4 में -24= Foreign elements, -32-39= Bilingual (dictionaries), -824= (Structural approach to expression) for those native language is different, -864= (Readers) for those whose native languages is different, आदि अंकनों के साथ निर्देशानुसार सारणी -6 से दूसरी भाषा का अंकन लाकर जोड़ा जा सकता है । जैसे, हिन्दी भाषा में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग = 491.43 + -24 + -21 = 491.432421

दो भाषाओं के कोष की वर्ग संख्या बनाने के लिये -32 -39 अंकन शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये निर्देश का पालन करना चाहिये । जैसे, जो भाषा किसी क्षेत्र में कम प्रयोग में लाई जाती है या उस क्षेत्र में उसका प्रचलन कम हो तो उसकी प्रतीक संख्या 420 से 490 के अनुक्रम से लेकर पहले प्रयोग में लाई जाती है । और उसके साथ -3= कोष का अंकन जोड़कर दूसरी भाषा का अंकन सारणी -6 से लेकर जोड़ दिया जाता है । जैसे, रूसी-हिन्दी कोष = 491.7 + -3 + - 91431 = 491.739143, यदि दोनों ही भाषायें उस क्षेत्र में कम प्रयोग में लाई जाती ही तो 420 से 490 के अनुक्रम में गणनात्मक दृष्टि

से जो भाषा बाद में अंकित हो उसे पहले स्थान दिया जायेगा, तथा उसके बाद -3 = कोष का अंकन जोड़कर सारणी -6 से दूसरी भाषा का अंकन लाकर जोड़ दिया जायेगा ।

सारणी -4 से -864 अंकन का प्रयोग करते समय भी यह ध्यान रखना चाहिये कि जिस भाषा की रीडर (पाठ माला) हो, उसका अंकन 420 से 490 के अनुक्रम से लेकर पहला स्थान दिया जाता है, तथा -864 अंकन उसके साथ जोड़कर सारणी -6 से उस भाषा का अंकन -864 के साथ जोड़ दिया जाता है जिस भाषा-भाषियों के लिये यह पाठ माला लिखी गई है ।

सारणी -6 में विश्व की सभी भाषाओं के अंकन दिये गये हैं । इस सारणी के अंकनों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता है । खण्ड -2 की अनुसूचियों में तथा कुछ सहायक सारणियों में यथास्थान इसके उपयोग के निर्देश दिये गये हैं । उदाहरणार्थ, मानक उपविभाजन सारणी -1 भौगोलिक सारणी -2, भाषा विषयक उपविभाजन सारणी -6 में कुछ स्थानों पर सारणी -6 के, अंकनों के प्रयोग के निर्देश दिये गये हैं । जैसे,

सारणी - 2 में -175 अंकन के नीचे दिया हुआ निर्देश : " Add languages notation 1-9 from table-6 to base number 175". अनुसूचियों में 398.9 के नीचे दिया हुआ निर्देश : "Add language notation 1-9 from table-6 to base number 398.9."

11. ग्रंथ सूची

1. Dewey (Melvil): Dewey decimal classification and relative index. 3V.Ed.19. Albany, Forest Press, 1979
2. सूद (एस.पी) एवं रावतानी (एम.आर.): क्रियात्मक ड्यूई दशमलव वर्गीकरण, जयपुर, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, 1987.
3. Satija (M.P.) and Camaroni (John P): Introduction to the practice of Dewey decimal classification. Delhi, Sterling, 1987.
4. Batty(C D): An introduction to the nineteenth edition of the Dewey decimal classification. London, Clive Bingley, 1981.